



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 297]

नई दिल्ली, बृहस्पतिवार, अक्टूबर 4, 2007/आश्विन 12, 1929

No. 297]

NEW DELHI, THURSDAY, OCTOBER 4, 2007/ASVINA 12, 1929

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 3 अक्टूबर, 2007

अंतिम जांच परिणाम

विषय : थाइलैण्ड से एक्रिलिक फाइबर के आयातों से संबंधित मामले में मध्यावधि पाटनरोधी जांच ।

सं. 15/13/2006.—1995 में यथासंशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे एतदपश्चात् अधिनियम कहा गया है) तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियम, 1995 (जिसे एतदपश्चात् नियम कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए :

क. मामले की पृष्ठभूमि :

1. यतः, भारत में घरेलू उत्पादक द्वारा प्रस्तुत आवेदन के आधार पर निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें एतदपश्चात् प्राधिकारी कहा गया है) ने दिनांक 13-9-1996 को पाटनरोधी जांच शुरू की थी और थाइलैण्ड, यू.एस.ए. तथा कोरिया जन गण के मूल के अथवा वहां से निर्यातित एक्रिलिक फाइबर (जिसे एतदपश्चात् सम्बद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की संस्तुति करते हुए, अपने अंतिम जांच परिणाम दिनांक 14-10-1997 की अधिसूचना सं. 47/एडीडी/आईडब्ल्यू द्वारा अधिसूचित किए थे । तत्पश्चात् दिनांक 26-4-1999 की अधिसूचना सं. 21/1/99-डीजीएडी द्वारा मध्यावधि समीक्षा की गई थी और दिनांक 19-4-2000 की अंतिम जांच परिणाम अधिसूचना सं. 21/2/99-डीजीएडी द्वारा निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क की संस्तुति की गई थी । दिनांक 7-8-2001 की अधिसूचना सं. 26/1/2001-डीजीएडी द्वारा पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा शुरू की गई थी और अंतिम जांच परिणाम दिनांक 6-8-2002 की अधिसूचना सं. 26/1/2001-डीजीएडी द्वारा जारी किए गए थे । दिनांक 9-10-2002 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 106/2002-सीमाशुल्क द्वारा सम्बद्ध वस्तुओं पर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क पुनः लगाया गया था ।

2. और, यतः, थाइलैण्ड से सम्बद्ध वस्तुओं के एक निर्यातक अर्थात् मै. थाई एक्रिलिक फाइबर कम्पनी लि. ने थाइलैण्ड के मूल के अथवा वहां से निर्यातित सम्बद्ध वस्तुओं पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की मध्यावधि समीक्षा प्रमाणित करते हुए, एक आवेदन प्रस्तुत किया है । आवेदक ने दावा किया है कि पाटन की स्थितियों में उल्लेखनीय बदलाव आ गया है और इस निर्यातक के संबंध में लागू पाटनरोधी उपाय की समीक्षा अपेक्षित है । निर्णायक समीक्षा जांच के आधार पर आवेदक निर्यातक पर 0.16 अम. डालर प्रति कि.ग्रा. की दर से पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था । तथापि, आवेदक ने दावा किया है कि मौजूदा शुल्क लगाए जाने के बाद साढ़े तीन वर्ष की अवधि व्यतीत हो चुकी है और बाजार की स्थितियों में सम्बद्ध वस्तुओं की लागत और कीमतों में परिवर्तन हो जाने के कारण निर्णायक समीक्षा में निर्धारित 12.39% की पाटन मार्जिन में भी परिवर्तन हो गया है । चूंकि आवेदक द्वारा सकारात्मक साक्ष्य प्रस्तुत किया गया, जिसमें उक्त निर्यातक हेतु पाटन मार्जिन तथा

शुल्क की दर की समीक्षा की आवश्यकता को प्रथम दृष्ट्या स्थापित किया गया था, अतः यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटन के दुष्प्रभाव को दूर करने के लिए सम्बद्ध देश के संबंध में शुल्क को जारी रखना अपेक्षित है और यदि शुल्क हटा लिया जाता है अथवा परिवर्तित किया जाता है अथवा दोनों कार्रवाइयां की जाती हैं तो क्या क्षति जारी रहने अथवा पुनः होने की सम्भावना है; प्राधिकारी द्वारा अधिनियम की धारा 9क(5) तथा पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के अंतर्गत दिनांक 3 जुलाई, 2006 की अधिसूचना द्वारा उपर्युक्त निर्यातक एवं थाइलैण्ड (जिसे एतदपश्चात् सम्बद्ध देश कहा गया है) के अन्य निर्यातकों पर लागू उपाय की मध्यावधि समीक्षा शुरू की गई। तथापि, इस जांच में अन्य देशों को, जिन पर दिनांक 06.08.2002 की निर्णायक समीक्षा जांच परिणाम द्वारा उक्त उपाय जारी रखा गया था, को शामिल नहीं किया गया था।

ख. प्रक्रिया

3. इस जांच के संबंध में निम्नलिखित प्रक्रिया का पालन किया गया है :-

(i) समीक्षा जांच की शुरुआत के बाद नियम 6(4) के अनुसरण में प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग, सम्बद्ध देशों के सभी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों एवं भारत स्थित सभी ज्ञात आयातकों को सूचित किया गया और प्रश्नावली के उत्तर एवं आवश्यक सूचना उपलब्ध कराने का अनुरोध किया गया;

(ii) सम्बद्ध देश के दूतावास को नियम 6(2) के अनुसार जांच प्रारंभ करने के बारे में सूचना दी गई थी और उनसे यह अनुरोध किया गया था कि वे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें;

(iii) यह जांच 1 अप्रैल, 2005 से शुरू करके 31 मार्च, 2006 (12 माह) की अवधि हेतु की गई थी। तथापि, क्षति की जांच में 2002-03, 2003-04, 2004-05 तथा अप्रैल 2005- मार्च, 06 (जांच अवधि) को शामिल किया गया था;

(iv) वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआई एंड एस) को संबद्ध वस्तु के पिछले तीन वर्ष एवं जांच अवधि के दौरान किए गए आयात का विवरण जुटाने का अनुरोध किया गया था;

(v) क्षति की जांच हेतु सम्बद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित घरेलू उत्पादकों ने अपनी लागत तथा क्षति संबंधी सूचना उपलब्ध कराई है :-

क. मेसर्स इण्डियन एक्रिलिक लि.

ख. मेसर्स पशुपति एक्रिलॉन

ग. मेसर्स वर्धमान एक्रिलिक

(vi) जांच शुरुआत अधिसूचना के संदर्भ में निम्नलिखित हितबद्ध पक्षों में अपने उत्तर प्रस्तुत किए :-

(क) इण्डियन स्पिनर्स एसोसिएशन

(ख) लुधियाना स्पिनर्स एसोसिएशन

(vii) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा व्यक्त सभी विचारों एवं निवेदनों पर, जिस सीमा तक वे वर्तमान जांच की दृष्टि से प्रासंगिक हैं, विचार किया है;

(viii) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा निरीक्षण किए जाने के लिए रखी गई सार्वजनिक फाइल के रूप में विभिन्न पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत किए गए साक्ष्यों के अगोपनीय रूप को उपलब्ध कराया था;

(ix) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति की जांच करने और सामान्यतः स्वीकृत लेखांकन सिद्धांतों (जीएएपी) के आधार पर उत्पादन की इष्टतम लागत की गणना करने और भारत में सम्बद्ध वस्तुओं को बनाने और बेचने की लागत ज्ञात करने के लिए घरेलू उद्योग और आवेदकों द्वारा प्रस्तुत सूचना का यथासम्भव सीमा तक सत्यापन किया ताकि यह अभिनिश्चय किया जा सके कि क्या पाटन मार्जिन से कम पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा;

(x) नियमावली के अनुसार सामान्य मूल्य एवं पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु प्राधिकारी ने इस समीक्षा में सहयोगी निर्यातकों द्वारा आवेदकों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों का सत्यापन भी किया ।

(xi) प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षों को मौखिक रूप से सुनने के लिए 27 सितम्बर, 2006 को एक सार्वजनिक सुनवाई का आयोजन किया था, जिसमें घरेलू उद्योग तथा सम्बद्ध देशों से सम्बद्ध वस्तुओं के निर्यातकों के प्रतिनिधि उपस्थित थे । सार्वजनिक सुनवाई में उपस्थित पक्षकारों से मौखिक रूप से व्यक्त विचारों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया । हितबद्ध पक्षों से प्राप्त लिखित निवेदन पर विचार किया गया और जहाँ तक सुसंगत तथा साक्ष्य प्रमाणित पाया गया, उन्हें प्रकटीकरण विवरण में भी शामिल किया गया ।

(xii) विभिन्न हितबद्ध पक्षों द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के बारे में उनके गोपनीयता दावे की भी जांच की गई । वह सूचना जो स्वाभाविक रूप से गोपनीय है अथवा जिसे हितबद्ध पक्षों द्वारा गोपनीय आधार पर उसके अगोपनीय सारांश के साथ प्रस्तुत किया गया है, को गोपनीय माना गया है । इस जांच परिणाम में **** घरेलू उद्योग द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना दर्शाती है, जिसे नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा गोपनीय माना गया है ।

(xiii) इस मामले के अनिवार्य तथ्यों से सम्बद्ध पक्षों को गोपनीय तथा सामान्य प्रकटीकरण के रूप में दिनांक 17 सितम्बर, 2007 को अवगत करा दिया गया था । प्रकटीकरण विवरण के बारे में हितबद्ध पक्षों की टिप्पणियों पर, जहाँ तक वे सुसंगत तथा साक्ष्य द्वारा समर्थित थीं, प्राधिकारी द्वारा विचार किया गया ।

ग. विचाराधीन उत्पाद तथा “समान वस्तु”

4. जांच शुरुआत अधिसूचना में यह अधिसूचित किया गया था कि मूल जांच तथा वर्तमान समीक्षा में शामिल उत्पाद एक्रिलिक फाइबर हैं । एक्रिलिक फाइबर संश्लेषित बहुलक की एक लम्बी शृंखला है, जो एक्रिलोनाइड्राइल के कम से कम 85% भार से निर्मित है, जो एक्रिलिक फाइबर के उत्पादन में प्रयुक्त प्रमुख कच्चा माल है । इसका वर्णन मोटे तौर पर फाइबर के रंग, लम्बाई तथा डेनियर के रूप में किया जाता है । इसे परिधान, घरेलू उपयोग की वस्तुओं के विनिर्माण में प्रयुक्त किया जाता है और इसका औद्योगिक उपयोग अत्यधिक है । इसे सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम,

1975 के अध्याय 55 में वर्गीकृत किया गया है। एक्रिलिक फाइबर सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची-1 के शीर्ष 550330 तथा भारतीय व्यापार वर्गीकरण के अनुसार 55033000 के अंतर्गत वर्गीकृत है। विचाराधीन उत्पाद के संबंध में किसी भी हितबद्ध पक्ष द्वारा कोई टिप्पणी नहीं की गई है। अतः विचाराधीन उत्पाद की एतद्वारा पुष्टि की जाती है।

5. प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस उत्पाद से संबंधित पिछली कतिपय जांचों में सीमाशुल्क शीर्ष 5503.30 के अंतर्गत आने वाले एक्रिलिक फाइबर तथा सीमाशुल्क शीर्ष 5501.30 के अंतर्गत आने वाले एक्रिलिक टो को समान वस्तु माना गया है। तथापि, इस समीक्षा जांच में टो को विचाराधीन उत्पाद के रूप में शामिल नहीं किया गया है, क्योंकि मूल जांच में इस उत्पाद को शामिल नहीं किया गया था। अतः केवल क्षति की जांच के प्रयोजनार्थ एक्रिलिक टो को समान उत्पाद माना गया है। सम्बद्ध देशों से आयातित तथा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित उत्पाद उनकी भौतिक एवं रासायनिक विशेषताओं, उत्पादन प्रक्रिया तथा तकनीकी एवं वाणिज्यिक निरन्तरता के मद्देनजर समान वस्तुएं हैं। अतः आयातित उत्पादों और घरेलू उत्पादों को समान वस्तु माना गया है। तथापि उपर्युक्त वर्गीकरण केवल संकेतात्मक हैं और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी प्रकार से बाध्यकारी नहीं है।

घ. घरेलू उद्योग

6. थाइलैण्ड के एक निर्यातक के अनुरोध पर समीक्षा जांच की शुरुआत के उत्तर में भारत में सम्बद्ध वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों की ओर से फोरम फॉर एक्रिलिक फाइबर मैन्युफैक्चरर्स (एफएएफएम) ने उत्तर प्रस्तुत किया है। तथापि, निर्यातक ने निवेदन किया है कि एफएएफएम ने संबंधित उत्पाद के केवल दो घरेलू उत्पादकों के बारे में सूचना प्रस्तुत की है, जबकि भारत में अन्य अनेक उत्पादक हैं। यह भी तर्क दिया गया था कि चूंकि एफएएफएम के निवेदन में केवल दो घरेलू उत्पादक शामिल हैं, अतः घरेलू उद्योग ने अपेक्षित सूचना प्रस्तुत नहीं की है और उन्हें असहयोगी मानते हुए उनके बारे में प्रतिकूल निष्कर्ष निकाला जाए और मौजूदा शुल्कों को वापस ले लिया जाए।

7. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्रारम्भ में, घरेलू उद्योग की ओर से कार्यवाई करते हुए फोरम फॉर एक्रिलिक मैन्युफैक्चरर्स ने केवल दो घरेलू उत्पादकों अर्थात् मेसर्स इण्डियन एक्रिलिक्स एवं मेसर्स वर्धमान एक्रिलॉन के बारे में ही उत्तर प्रस्तुत किया था। तत्पश्चात् उन्होंने एक अन्य घरेलू उत्पादक अर्थात् मेसर्स पशुपति एक्रिलॉन के संबंध में भी आंकड़े प्रस्तुत किए। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि सम्बद्ध वस्तुओं के अन्य बड़े उत्पादकों अर्थात् मेसर्स कन्सॉलिडेटेड फाइबर एण्ड केमिकल्स तथा आईपीसीएल ने कुछ समय पहले (जांच अवधि के बाद) अपना उत्पादन स्थगित कर दिया था। तीनों उत्तरदाता उत्पादकों की जांच अवधि के दौरान भारत में सम्बद्ध वस्तुओं के कुल उत्पादन में हिस्सेदारी 50% से अधिक है, अतः वर्तमान मामले में क्षति की जांच के प्रयोजनार्थ उन्हें घरेलू उद्योग मानना अपेक्षित है।

ड. हितबद्ध पक्षों द्वारा उठाए गए अन्य मुद्दे

ड.1. समीक्षा हेतु आवेदक अर्थात् मेसर्स थाई एक्रिलिक फाइबर कम्पनी लि. के विचार

8. समीक्षा हेतु आवेदन मेसर्स थाई एक्रिलिक फाइबर कम्पनी लि. ने प्रस्तुत किया है। अपने आवेदन में समीक्षा की मांग तथा अन्य निवेदन करते हुए आवेदक ने निम्नानुसार अनुरोध किया है :-

- कि बाजार की स्थितियों में उल्लेखनीय परिवर्तन हुए हैं जिसके लिए पाटनरोधी उपायों की समीक्षा अपेक्षित है;
- कि अधिनियम की धारा 9क(5) के पहले परन्तुक के अंतर्गत निर्णायक समीक्षा में प्राधिकारी से यह जांच करने की अपेक्षा की जाती है कि क्या वर्तमान शुल्क को समाप्त कर देने से पाटन एवं क्षति जारी रहने अथवा उसकी पुनरावृत्ति होने की सम्भावना है। इसके विपरीत, मध्यावधि समीक्षा में प्राधिकारी से पाटन तथा क्षति की जांच करने और समीक्षा के परिणामों के आधार पर शुल्क का पुनःनिर्धारण करने की अपेक्षा की जाती है। नियम 23 के अनुसरण में प्राधिकारी से शुल्क को जारी रखने की आवश्यकता की समीक्षा की जानी अपेक्षित है। यदि प्राधिकारी संतुष्ट हैं कि शुल्क को जारी रखने की आवश्यकता नहीं है तो वह शुल्क को वापस ले लेने की सिफारिश करेंगे। तथापि, यदि प्राधिकारी शुल्क को वापस ले लेने के बारे में संतुष्ट नहीं हैं, परंतु यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इसे जारी रखना होगा, तो वे यह निर्धारित करेंगे कि शुल्क को किस दर पर जारी रखा जाए। उनसे यह निर्धारण करने की अपेक्षा की जाती है कि शुल्क उसी दर पर जारी रहेंगे अथवा किसी भिन्न दर पर जारी रहेंगे। दर कम या अधिक हो सकती है। उदाहरणार्थ मध्यावधि समीक्षा में प्राधिकारी द्वारा निर्धारित पाटन मार्जिन मूल जांच में निर्धारित मार्जिन से अधिक है तो शुल्क को पुराने स्तर पर जारी रखा जाना अनुचित होगा। इसी प्रकार यदि पाटन मार्जिन, मूल जांच की तुलना में कम है, तो शुल्क में कमी करने का मामला बनता है।
- कि वर्तमान जांच से यह प्रकट होगा कि या तो घरेलू उद्योग को कोई क्षति नहीं हुई है अथवा यदि क्षति हुई है, तो वह सम्बद्ध देशों से आयातों के कारण नहीं हुई है। अतः वर्तमान मामले में शुल्क को जारी रखने की कोई जरूरत नहीं है।

9. आवेदक निर्यातक ने प्रकटीकरण विवरण के पश्चात की गई टिप्पणियों में अपनी इस वैचारिक स्थिति को दुहराया है कि यह मध्यावधि समीक्षा होने के कारण पाटन तथा क्षति जारी रहने अथवा उनकी पुनरावृत्ति की जांच का कोई कानूनी आधार नहीं है, क्योंकि यह केवल निर्णायक समीक्षा में ही अपेक्षित है।

ड.2.घरेलू उद्योग के विचार

10. अपने विभिन्न निवेदनों में घरेलू उद्योग ने समीक्षा शुरू करने का विरोध किया है और अन्य बातों के साथ-साथ निवेदन किया है कि :-

- कि शुल्क दिनांक 8 अक्टूबर, 2007 को समाप्त हो जाएगा, यदि पांच वर्ष की अवधि की गणना इसे बढ़ाए जाने की तारीख अर्थात् 9 अक्टूबर, 2002 से की जाती है। अतः मध्यावधि समीक्षा का आवेदन खारिज कर दिया जाना चाहिए और प्राधिकारी द्वारा निर्णायक समीक्षा जांच की शुरुआत की जानी चाहिए।
- कि पिछले चार जांच परिणामों में मेसर्स थाई एक्रिलिक फाइबर्स द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों/सूचना के आधार पर प्राधिकारी द्वारा पाटन मार्जिन अत्यधिक पाया गया था, हालांकि इस निर्यातक ने पाटन मार्जिन न्यूनतम से कम होने का दावा किया था और वर्तमान जांच के तथ्य एवं परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि पाटन मार्जिन में अत्यधिक वृद्धि हुई है, न कि कमी, जैसा कि निर्यातकों ने दावा किया है।

- कि निर्यातक ने पाटन की संभावना के बारे में कोई सूचना दर्ज नहीं कराई है। थाई एक्रीलिक ने मौखिक सुनवाई के वक्त यह स्पष्ट रूख अपनाया था कि निर्दिष्ट प्राधिकारी को मध्यावधि समीक्षा में पाटन की संभावना का निर्धारण करना अपेक्षित नहीं था। थाई एक्रीलिक फाइबर का दावा भारतीय नियमों और डब्ल्यू टी ओ कसर 11.2 को ध्यान में रखते हुए मान्य नहीं है।
- कि अभिव्यक्ति "कि क्या शुल्क को लगातार कायम रखना पाटन की भरपाई करने के लिए आवश्यक है" इस बात की पर्यायवाची है "कि क्या ऐसे शुल्क को लगातार कायम रखने हेतु कोई औचित्य नहीं है।" यह तर्क दिया गया है कि पाटनरोधी शुल्क को वापस केवल तब लिया जा सकता है जब पाटनरोधी शुल्क को लगातार कायम रखने के लिए कोई औचित्य न हो। दूसरे शब्दों में, पाटनरोधी शुल्क केवल इस कारण से वापस नहीं लिया जा सकता कि समीक्षा जांच की जांच अवधि में पाटन मार्जिन में गिरावट आई। जांच अवधि में कम पाटन मार्जिन स्थापित करने के पश्चात निर्यातक से यह स्थापित कराके कि पाटनरोधी शुल्क को वापस लेने की स्थिति में पाटन की आवृत्ति की कोई संभावना नहीं है यह स्थापित करना अपेक्षित है कि पाटनरोधी शुल्क को लगातार कायम रखने हेतु कोई औचित्य नहीं है।
- कि एक्रोलोनाइड्राइल संबद्ध वस्तु के उत्पादन हेतु प्रमुख निविष्टि है। तेल की कीमतों में वृद्धि एक वैश्विक परिघटना है जिसके परिणामस्वरूप अनेक पेट्रोलियम आधारित व्युत्पन्नों की कीमतों में वृद्धि हुई है। एक्रोलोनाइड्राइल की कीमतों में मौजूदा क्षति अवधि के दौरान बहुत भारी वृद्धि हुई है।
- कि ई. सी. और यू. एस. जैसे अन्य क्षेत्राधिकारों में निर्यातक के कीमत संबंधी व्यवहार की यह जांच करने की दृष्टि से कि क्या निर्यातक से पाटनरोधी शुल्कों को वापस लेने की स्थिति में आयातक बाजार में वस्तुओं का पाटन करने की संभावना है, बीजक आधार द्वारा बीजक पर विस्तार से जांच की गई।

11. घरेलू उद्योग ने अपने पश्च प्रकटन विवरणों में अपने इस रूख को दोहराया है कि निर्यातक ने संभावना जांच हेतु तीसरे देशों के संबंध में पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए तीसरे देश की निर्यात कीमत पर पर्याप्त सूचना मुहैया नहीं कराई है। घरेलू उद्योग ने आगे यह दलील दी है कि पाटन और परिणामी क्षति, पाटनरोधी शुल्क में कमी करने अथवा इसे वापस लेने के साथ ही गहन होगी।

ड.3 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार:

12. मै0 इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन और लुधियाना स्पिनर्स एसोसिएशन ने अपने संक्षिप्त अनुरोधों में अन्य बातों के साथ-साथ निर्यातक मै0 थाई एक्रीलिक के तर्कों का समर्थन लागू पाटनरोधी शुल्क की समीक्षा करने के लिए किया है और यह तर्क दिया है कि आवेदक निर्यातक ने कोई पाटन नहीं किया है और घरेलू उद्योग द्वारा वहन की गई क्षति, यदि कोई हो, संबद्ध देश से पाटन के कारण नहीं हुई है।

13. घरेलू उद्योग और आवेदक निर्यातक और पूर्वोक्त एसोसिएशनों सहित हितबद्ध पक्षकारों ने अपने पञ्च प्रकटन अभ्यावेदनों में कतिपय मुद्दों को उठाया है जिनकी जांच हो चुकी है, और जांच परिणामों के प्रासंगिक स्थानों पर उस सीमा तक जहाँ तक उठाए गए मुद्दे वैध और विधिवत् प्रमाणित हैं शामिल किया गया है।

ड.4 प्राधिकारी द्वारा जांच

14. प्राधिकारी ने इस समीक्षा जांच की शुरुआत के संबंध में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए विभिन्न अभ्यावेदनों की बारीकी से जांच की है।

15. पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित धारा 9 क (5) में यह प्रावधान है कि निर्दिष्ट प्राधिकारी पाटनरोधी शुल्क को कायम रखने हेतु आवश्यकता की समय-समय पर समीक्षा करेगा और वह यदि उसे प्राप्त सूचना के आधार पर संतुष्ट है कि ऐसे शुल्क को लगातार कायम रखने का कोई औचित्य नहीं है, केन्द्र सरकार को इसको वापस लेने की सिफारिश करेगा।

16. करार के अनुच्छेद 11.2 में यह प्रावधान है कि प्राधिकारी अपनी पहल पर जहाँ आवश्यक हो अथवा किसी हितबद्ध पक्षकार, जो समीक्षा की आवश्यकता को प्रमाणित करने के लिए सकारात्मक सूचना उपलब्ध कराता है, द्वारा अनुरोध किए जाने पर बशर्ते निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद से पर्याप्त समयावधि व्यतीत हो गई हो, शुल्क को लगातार कायम रखने की आवश्यकता की समीक्षा करेंगे। हितबद्ध पक्षकारों को प्राधिकारियों से यह जांच करने के लिए अनुरोध करने का अधिकार होगा कि क्या शुल्क को लगातार जारी रखना पाटन की भरपाई करने के लिए आवश्यक है, कि क्या यदि शुल्क को हटा लिया जाए अथवा इसमें परिवर्तन किए जाएं तो क्षति के जारी रहने या इसकी आवृत्ति होने या दोनों की संभावना होगी। यदि इस पैराग्राफ के अंतर्गत समीक्षा के परिणामस्वरूप, प्राधिकारी यह निर्धारित करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क की अब कोई आवश्यकता नहीं हो तो इसे तत्काल प्रभाव से समाप्त कर दिया जाएगा।

17. प्राधिकारी नोट करते हैं कि थाईलैंड के आवेदक निर्यातक ने समीक्षा के लिए अपने आवेदन में केवल अपने पाटन मार्जिन की समीक्षा करने का अनुरोध किया था और क्षति के पहलू की किसी समीक्षा हेतु कोई दलील नहीं दी थी। तथापि, प्राधिकारी ने जहाँ तक थाईलैंड के आयात संबंधित थे, समीक्षा के दायरे को बढ़ाकर इसमें क्षति को भी शामिल किया था। इसलिए, आवेदक निर्यातक हेतु पाटन मार्जिन के दायरे की समीक्षा करते समय, प्राधिकारी से यह जांच करना भी अपेक्षित है कि क्या परिवर्तित परिस्थितियों के मद्देनजर शुल्क को लगातार कायम रखना अपेक्षित है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि अन्य क्षेत्राधिकारों में इस संबंध में निहित व्यवहार शुल्क को लगातार जारी रखने के लिए पाटन मार्जिन अथवा क्षति में गिरावट की ओर ले जाती बदलती परिस्थितियों की बने रहने की प्रकृति की जांच करना है। इसलिए परिवर्तित परिस्थितियों के बरकरार रहने की प्रकृति में जांच में पाटन और क्षति की संभावना वाले पहलू की जांच करना भी अपेक्षित होगा। तदनुसार, प्राधिकारी ने शुल्क को लगातार कायम रखने की आवश्यकता और इसकी मात्रा को निर्धारित करने के लिए मौजूदा पाटन और क्षति साथ ही साथ परिवर्तित परिस्थितियों के बने रहने की प्रकृति की भी जांच की है।

च. पाटन निर्धारण

च.1 पाटन का जारी रहना: सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण: मै0 थाई एक्रिलिक फाइबर कंपनी लिमिटेड, थाईलैंड

18. थाईलैंड के केवल एक निर्यातक/विनिर्माता अर्थात् मौजूदा समीक्षा के लिए आवेदक मै0 थाई एक्रिलिक फाइबर कंपनी लिमिटेड ने समीक्षा हेतु अपने अनुरोध के अनुसार संशोधित पाटन मार्जिन के निर्धारण हेतु प्रश्नावली के अनुसार अपनी घरेलू बिक्री और निर्यात बिक्री साथ ही साथ उत्पादन की लागत संबंधी आंकड़े दर्ज कराए हैं। निर्यातक द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचना निर्देशित प्रक्रिया के अनुसार प्राधिकारी द्वारा सत्यापित भी की गई थी और पाटन मार्जिन निम्नानुसार निर्धारित किया गया था:

(क) सामान्य मूल्य:

19. समीक्षा के लिए आवेदक ने विनिर्मित और उनके द्वारा बेचे जा रही संबद्ध वस्तु की घरेलू एवं निर्यात बिक्रियों के ब्यौरे के साथ ब्यौरेवार प्रश्नावली उत्तर दाखिल किया। सामान्य मूल्य की गणना करने के लिए व्यापार के सामान्य दौर में संबद्ध वस्तु की घरेलू बिक्री पर सत्यापित आंकड़ों के आधार पर विचार किया है। बट्टा, साख लागत, प्रत्याभूत कमीशन और अंतर्देशीय भाड़ा पर यथा सत्यापित उपयुक्त समायोजन को घरेलू बाजार में प्रत्येक सौदे की कारखाना द्वार कीमत ज्ञात करने के लिए प्रयुक्त किया गया है।

20. घरेलू उद्योग ने अपनी पश्च प्रकटन टिप्पणियों में उत्पादन की लागत, समायोजन और व्यापार के सामान्य दौर में परीक्षण में अपशिष्ट के उपचार के संबंध में कतिपय मुद्दे उठाए थे। इस मुद्दे की प्राधिकारी द्वारा जांच की गई है और यह पाया गया है कि निर्धारण, नियमावली के अनुसार किया गया है और सभी समायोजन व्यापार के सामान्य दौर में परीक्षण के पहले सौदा स्तर पर किए गए हैं। अतः अपशिष्ट के संबंध में घरेलू उद्योग की चिंताओं को भी ध्यान में रखा गया है और निर्धारण की विधि में कोई परिवर्तन अपेक्षित नहीं है। निर्यातक ने भी साख समायोजन की गणना में छुटपुट गलतियों को इंगित किया है जिन्हें सुधार लिया गया है। तदनुसार, कारखाना द्वार स्तर पर सामान्य मूल्य निम्नानुसार बनता है:

सामान्य मूल्य की गणना		
	मात्रा किग्रा.	मूल्य बहत
घरेलू बिक्री	*****	*****
सकल बिक्री कीमत/मी. टन		*****
समायोजन		
पहले से समायोजित बट्टा		
वर्ष 2005 के दौरान अवधि ऋण के लिए 4.55 प्रतिशत का औसत मानकर परिकल्पित ब्याज		*****

लेखा बहियों के अनुसार प्रत्याभूत कमीशन		*****
अंतर्देशीय भाड़ा		*****
कुल समायोजन		*****
कारखाना द्वार सामान्य मूल्य (क) बहत /मी.टन		*****

(ख) निर्यात कीमत:

21. जांच अवधि के दौरान थाई एक्रिलिक ने ***** मी.टन एक्रिलिक फाइबर का भारत को निर्यात किया था। जांच अवधि के दौरान भारत को निर्यातों के बीजक-वार ब्यौरे पर सत्यापित आंकड़ों के आधार पर विचार किया गया था। परिशिष्ट - 3 में निर्यातक द्वारा दावा किए गए समायोजनों पर सत्यापित आंकड़ों के आधार पर और भारत को कारखाना-द्वार निर्यात कीमत ज्ञात करने के लिए विचार किया गया था। सत्यापन के दौरान समायोजनों के उनके दावों से संबंधित ब्यौरे का कंपनी द्वारा रखे गए रिकार्ड से सत्यापन किया गया था। तदनुसार, निवल-कारखाना निर्यात कीमत निम्नानुसार बनती है।

निर्यात कीमत	मात्रा किग्रा. में	बहत
परिशिष्ट 2/मी.टन के अनुसार सी आईएफ कीमत	*****	*****
निर्यात प्रोत्साहन		*****
विदेशी मुद्रा पर लाभ का हिस्सा (परिशिष्ट 9)		*****
सकल निर्यात कीमत		*****
घटाएं : परिशिष्ट 2 के अनुसार समायोजन		
समुद्री भाड़ा		*****
सफाई एवं अग्रेषण		*****
अंतर्देशीय भाड़ा		*****
पतन प्रभार		*****
बीमा		*****
कुल समायोजन		*****
कारखाना द्वार निर्यात कीमत बहत/मी.टन (ख)		*****

च.2 थाईलैंड के अन्य सभी निर्यातक

(क) सामान्य मूल्य

22. इस समीक्षा जांच के उत्तर में थाईलैंड के किसी अन्य निर्यातक ने प्राधिकारी के समक्ष कोई अनुरोध नहीं किया अतः थाईलैंड के अन्य सभी निर्यातकों के लिए प्राधिकारी ने आर आई एल मामले में उच्चतम न्यायालय के निर्णय के अनुसार सहयोगी निर्यातक के लिए निर्धारित सामान्य मूल्य को समग्र थाईलैंड के लिए सामान्य मूल्य के रूप में स्वीकार किया है।

(ख) निर्यात कीमत

23. निवल निर्यात कीमत का निर्धारण परिवहन, समुद्री भाड़े, कमीशन आदि के लिए समायोजनों की अनुमति देने के बाद थाईलैंड के सहयोगी निर्यातक के निर्यात संबंधी आंकड़ों के अनुसार थाईलैंड से न्यूनतम निर्यात सौदा मूल्य के आधार पर किया गया है। निवल निर्यात कीमत **** बहत प्रति मी.टन बनती है।

च.3 पाटन मार्जिन

24. पाटन मार्जिन का निर्धारण करने के लिए कारखाना द्वार स्तर पर निर्धारित सामान्य मूल्य की निम्नानुसार तुलना कारखाना स्तर पर निर्धारित निवल निर्यात कीमत के साथ की गई है।

पाटन मार्जिन की गणना	सामान्य मूल्य वहत/मी.टन	निर्यात कीमत वहत/मी.टन	पाटन मार्जिन	पाटन मार्जिन %
मै0 थाई एक्रिलिक थाईलैंड	*****	*****	*****	2.53%
थाईलैंड के अन्य सभी निर्यातक	*****	*****	*****	29.65%

25. संबद्ध देश से वर्तमान पाटन मार्जिन न्यूनतम सीमा से अधिक पाया गया है।

च.4 परिवर्तित परिस्थितियों का स्थाई स्वरूप और पाटन के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना

26. इस बात का निर्धारण करने के लिए कि क्या पाटन की परिवर्तित परिस्थितियां स्थाई स्वरूप की हैं और क्या शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में भविष्य में पाटन जारी रहेगा या उसकी पुनरावृत्ति होगी, आवेदक निर्यातक की बिक्री मात्रा की प्रवृत्ति तथा घरेलू बाजार और तीसरे देश के निर्यात बाजारों में उसकी कीमतों की समग्र स्तर पर जांच की गई है।

27. यह देखा गया है कि पिछले तीन वर्षों में आवेदक निर्यातक के भारत को निर्यात की मात्रा में लगभग 30 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई जबकि घरेलू बिक्री में लगभग 9 प्रतिशत तक की गिरावट आई। इस निर्यातक के अन्य देशों को निर्यात लगभग 70 प्रतिशत तक बढ़ गए। कुल निर्यात कंपनी की कुल बिक्री का लगभग 70 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं और भारत को निर्यात कुल निर्यातों का लगभग *** % है। इसलिए, कंपनी की थाईलैंड में घरेलू मांग से अधिक भारी अतिशेष क्षमता है और कंपनी निर्यात बाजार पर अत्यधिक निर्भर करती है और भारतीय बाजार निर्यातक के लिए महत्वपूर्ण बाजार बना हुआ है।

थाई एक्रिलिक की बिक्री की किग्रा. में मात्रा	2004	2005	जांच अवधि
1. भारत को निर्यात	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100.00	134.38	129.52
2. घरेलू बिक्री	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100.00	94.26	91.43
3. अन्य देशों को निर्यातित	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100.00	164.75	171.45
कुल	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100.00	130.98	132.80

28. कंपनी के कीमत संबंधी आंकड़े दर्शाते हैं कि जहाँ भारत को निर्यात कीमत में शुल्क लगाए जाने के पश्चात लगभग 10 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई वहीं घरेलू कीमत में केवल 7 प्रतिशत की वृद्धि हुई और तीसरे देशों को निर्यात कीमत में केवल लगभग 5 प्रतिशत की वृद्धि हुई। तीसरे देशों की निर्यात कीमतें, भारतीय बाजार को निर्यात कीमतों की तुलना में काफी कमतर बनी हुई है। कीमत प्रवृत्ति दर्शाती है कि भारतीय बाजार की कीमत में परिवर्तन अन्य बाजारों में कंपनी की कीमतों में सामान्य प्रवृत्ति की तुलना में पाटनरोधी शुल्क की वजह से अधिक हुआ है।

मै0 एक्रिलिक की बहत/किग्रा. में कीमत	2004	2005	जांच अवधि
1. भारत को निर्यात	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100.00	109.03	109.93
2. घरेलू बिक्री	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100.00	106.25	107.08
3. अन्य देशों को निर्यातित	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	100.00	104.73	104.88

29. प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि एक्रिलिक फाइबर की कीमतें एक्रिलोनाइड्राइल कीमत पर निर्भर है जिनमें इस अवधि के दौरान भारी वृद्धि हुई है और मुख्य कच्चे माल की कीमत में वृद्धि निर्यातक की कीमत संरचना में पूर्णतः प्रतिबिम्बित नहीं हुई होगी जो मध्यम वृद्धि प्रदर्शित करती है। अतः मात्रा और कीमत संबंधी आंकड़े दर्शाते हैं कि यद्यपि वर्तमान जांच अवधि में पाटन मार्जिन में कमी आई है तथापि यह टिकाऊ प्रकृति का नहीं है और यदि शुल्क हटा लिया जाता है तो संबद्ध देश से आवेदक निर्यातक द्वारा पाटन की पुनरावृत्ति की अत्यधिक संभावना है।

30. प्राधिकारी इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन और मिल ओनर्स एसोसिएशन की दलीलों कि यह दावा करना सही नहीं है कि किसी उत्पाद की कीमत, निविष्टि की कीमत में प्रत्येक वृद्धि के साथ समानुपातिक रूप से बढ़नी चाहिए, को नोट करते हैं। इन एसोसिएशनों द्वारा यह तर्क दिया गया है

कि प्राधिकारी द्वारा उल्लेख की गई स्थिति आदर्श स्थिति है जो वास्तविक व्यवहार में कभी भी विद्यमान नहीं होती है। यद्यपि निविष्टि की लागत में वृद्धि हो सकती है तथापि उत्पादक अंतिम उत्पादन की कीमत को बढ़ाकर निविष्टि की लागत में वृद्धि करने में समर्थ नहीं होगा। कुल मिलाकर कीमत माँग- आपूर्ति की स्थिति, प्रतिस्थापन के प्रभाव और सामान्य आर्थिक स्थितियों आदि पर निर्भर होती हैं। आगे यह तर्क दिया गया है कि थाई एक्रिलिक का प्रमुख बाजार भारत नहीं है जहाँ निर्यात में 30% की वृद्धि हुई है किन्तु अन्य देश हैं जहाँ निर्यात में 70% की वृद्धि हुई है। अतः इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि परिवर्तित परिस्थितियाँ अंतिम स्वरूप की नहीं होंगी।

31. इस सम्बन्ध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि भारत और अन्य देशों को निर्यातों की मात्रा तथा कीमत की प्रवृत्तियों, दोनों से यह पता चलता है कि भारत के लिए कीमत में वृद्धि एक विरला परिदृश्य है जो अन्य बाजारों में कंपनी की कीमत की सामान्य प्रवृत्ति के अनुरूप नहीं है। घरेलू बाजार तथा निर्यात के अन्य बाजारों में निर्यात तक की कीमतों से यह पता चलता है कि अन्य बाजारों में उसकी निर्यात कीमतें भी अत्यधिक पाटित कीमतें हैं। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि कम्पनी का निर्यातोन्मुखी होना अत्यधिक महत्वपूर्ण है इसलिए यह निष्कर्ष निकालना कठिन होगा कि परिवर्तित परिस्थितियाँ अंतिम स्वरूप की हैं और भारत के लिए कीमत का स्तर उस स्थिति में बना रहेगा यदि शुल्क समाप्त कर दिया जाता है। प्राधिकारी का यह मत है कि आवेदक निर्यातक द्वारा पाटन के स्तर में गिरावट के स्वरूप में परिवर्तित परिस्थितियाँ अंतिम स्वरूप की नहीं हैं और यदि शुल्क समाप्त किया जाता है तो सम्बद्ध देश से आवेदक निर्यातक द्वारा पाटन की पुनरावृत्ति किए जाने की भारी संभावना है।

छ. क्षति एवं कारणात्मक संबंध का निर्धारण

छ.1. हितबद्ध पार्टियों के विचार

छ.1.1 मै. थाई एक्रिलिक फाइबर कम्पनी लि., थाइलैण्ड

32. प्राधिकारी नोट करते हैं कि थाइलैण्ड के आवेदक निर्यातक की समीक्षा हेतु अपने मूल आवेदन में मै. थाई एक्रिलिक फाइबर कम्पनी लि. ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति को समीक्षा का एक मुद्दा नहीं बनाया था। लेकिन बाद में उन्होंने घरेलू उद्योग को क्षति के मुद्दे पर निम्न तर्क दिए हैं :

- कि घरेलू उत्पादकों ने जांच अवधि के दौरान वस्तुतः बाजार हिस्सा प्राप्त किया है और घरेलू उत्पादकों के बीच ही परस्पर प्रतिस्पर्धा (क) सम्बद्ध देशों तथा अन्य देशों से आयातों के बाजार हिस्से में गिरावट; (ख) अन्यो की तुलना में कुछ उत्पादकों द्वारा प्राप्त बाजार हिस्से में उच्चतर वृद्धि का कारण प्रतीत होती है।
- कि यदि शुल्क समाप्त भी कर दिया जाता है तो सम्बद्ध देश से आयातों में वृद्धि की सम्भावना काफी कम प्रतीत होती है।
- कि मौजूदा 9 अक्टूबर, 2002 को लगाया गया था। वर्ष 2003-04 में दोनों भागीदार उत्पादकों की घरेलू बिक्री में 13% की वृद्धि हुई थी। तथापि, पाटनरोधी शुल्क लागू रहने पर भी घरेलू बिक्री में वर्ष 2004-05 के दौरान 10% की गिरावट आई और वर्ष 2005-06 के दौरान इसमें आगे और 1% की गिरावट आई।

- कि घरेलू उत्पादकों की निदेशक रिपोर्ट में एक्रिलिक फाइबर व्यापार के घटिया निष्पादन के कारणों को कर विसंगतियों तथा एक्रिलिक यार्न की मांग में वृद्धि को प्रतिकूल रूप से प्रभावित करने वाली उच्च निविष्टि लागतों; मानव निर्मित फाइबर से यार्नों के उत्पादन के मामले में निविष्टि स्तर पर उत्पाद शुल्क का उपयोग करने में कताई उद्योग की अक्षमता, जिसके परिणामस्वरूप सिंथेटिक तथा ब्लेंडेड यार्न की माँग में कमी आई; और एक्रिलिक उत्पादकों के मार्जिन में गिरावट के रूप में अभिज्ञात किया है।
- कि भारत में कॉटन यार्न तथा पॉलिस्टर की प्रतिस्पर्धा के कारण एक्रिलिक यार्न की कीमत भी कम बनी रही। उक्त रिपोर्ट में यह भी तर्क दिया गया था कि एक्रिलिक फाइबर के अकेले संयंत्र को कच्ची सामग्रियों पर निविष्टि ऋणों का कम उपयोग किए जाने के कारण भारी घाटा होने की संभावना है।
- कि उक्त रिपोर्ट में यह भी उल्लेख किया गया है कि वर्ष 2005 में एक्रिलिक फाइबर की वैश्विक माँग वर्ष 2004 में रही 2.72 मि. मी. टन से घटकर 2.64 मि. मी. टन हो गई जिसमें लगभग 3% की गिरावट आई। इस गिरावट के एक भाग के रूप में कॉटन की कम कीमतों के कारण अंतर्फाइबर प्रतिस्थापन को माना जा सकता है जिससे पॉलिस्टर की खपत और उसकी कीमत में वैश्विक रूप से गिरावट आई जिससे अन्ततः एक्रिलिक फाइबर की खपत और कीमतों पर प्रभाव पड़ा। विश्व भर के एक्रिलिक फाइबर के उत्पादकों ने फाइबर की कीमतों में गिरावट तथा एक्रीलोनाइड्राइल की कीमतों में वृद्धि की दोहरी समस्या का सामना किया। एक्रिलिक फाइबर के उत्पादकों लिए उपलब्ध औसत क्षेत्र 5 वर्ष से अधिक समय में सबसे कम रहा था।
- कि भारतीय घरेलू उत्पादकों द्वारा अन्य देशों को अपने उत्पादन की पर्याप्त मात्रा का निर्यात किया जाता है। उन्हें अपनी निर्यात बिक्रियों में भारी घाटा हुआ है। घरेलू उद्योग के लिए क्षति का निर्धारण करते समय निर्यातों के कारण हुए घाटे को अलग रखा जाना चाहिए और घरेलू बिक्री पर हुए घाटे, यदि कोई हो, को ही लिया जाना चाहिए।
- उपर्युक्त स्थिति का सारांश प्रस्तुत करते हुए निर्यातक ने अन्य बातों के साथ-साथ यह तर्क दिया है कि वर्ष 2005-06 के दौरान क्षति पाटन से भिन्न निम्नलिखित कारकों के कारण हुई थी क्योंकि पाटित आयात भारतीय घरेलू उद्योग को हुए क्षति के कारण नहीं थे :-
 - मानव निर्मित फाइबर को समान व्यवहार दिए बिना कॉटन यार्न पर उत्पाद शुल्क की समाप्ति;
 - कच्ची सामग्रियों पर निविष्टि ऋणों की अनुपलब्धता;
 - स्थापित क्षमताओं में वृद्धि के कारण माँग-आपूर्ति में असमानता;
 - अंतर्फाइबर प्रतिस्थापन;
 - भारत में एक्रिलिक फाइबरों की प्रत्यक्ष खपत में गिरावट;
 - घरेलू फाइबर उत्पादकों द्वारा क्षमता संवर्धन जिसकी वजह से क्षमता का कम उपयोग हुआ जिससे कीमतों और मार्जिनों पर अत्यधिक दबाव बना।

छ.1.2 घरेलू उद्योग के विचार

33. अपने अनुरोधों में घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ-साथ निम्नानुसार तर्क दिया है :

- कि घरेलू उद्योग को अनेक स्रोतों से उत्पाद के पाटन के कारण क्षति हुई है। इनमें से अनेक स्रोतों पर या तो पाटनरोधी शुल्क लगाया जा रहा है या शुल्क हाल ही में समाप्त कर दिया गया

है। इस प्रकार इस मध्यावधि समीक्षा जांच में घरेलू उद्योग को हुई क्षति को मौजूदा शुल्क के आलोक में देखने की जरूरत है।

- कि पिछले एक दशक के दौरान भारत में एक्रिलिक फाइबर की माँग में अच्छी वृद्धि हुई है। तथापि, जहाँ विश्व में एक्रिलिक फाइबर की क्षमता माँग से काफी अधिक है वहीं थाई एक्रिलिक फाइबर जैसे उत्पादकों द्वारा स्पष्ट तौर पर निर्यात बाजारों को ध्यान में रखते हुए अपनी घरेलू माँग में वृद्धि के अनुपात में क्षमताएँ नहीं बढ़ाई गई हैं। ऐसे क्षमता विस्तार स्वाभाविक रूप से अन्य उत्पादकों के जोखिम पर किए जाते हैं।
- कि थाई एक्रिलिक फाइबर भी उतना सहयोगी नहीं है जैसी कि निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष कम्पनी द्वारा प्रदर्शित किए जाने की अपेक्षा की गई है क्योंकि वर्ष 2005 में इस कम्पनी को मामूली लाभ मार्जिन प्राप्त हुआ है।
- कि आयात अभी भी पाटित कीमतों पर जारी हैं और पाटित आयातों की मात्रा वर्तमान जांच में पर्याप्त स्तर पर बनी रही है। मूल जांच के समय जो परिस्थितियाँ विद्यमान थीं वे आज की तारीख को भी उतनी ही बनी हुई हैं। परिस्थितियों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है जिससे केवल यह पता चलता है कि पाटन की उच्च स्तर पर पुनरावृत्ति होगी।
- कि थाइलैण्ड में उत्पादक द्वारा सृजित क्षमता उनके स्थानीय बाजार की माँग से काफी अधिक है। तीसरे देश के बाजार को याचिकाकर्ता द्वारा किए गए निर्यात की भारी मात्रा से यह पता चलता है कि पाटनरोधी शुल्क को समाप्त किए जाने की स्थिति में आयातों की मात्रा में पर्याप्त वृद्धि होगी। इसके अलावा, घरेलू उद्योग यह मान रहा है कि याचिकाकर्ता अपनी क्षमता का विस्तार भी कर रहा है।
- कि तीसरे देशों को निर्यातक के निर्यात अत्यधिक पाटित कीमतों पर किए गए हैं।
- कि यह स्पष्ट है कि घरेलू उद्योग को सम्बद्ध देश तथा अन्य देशों से सम्बद्ध वस्तु के सतत पाटन का सामना करना पड़ रहा है। तथापि, इस बात पर विश्वास करने या औचित्य देखने का कारण है कि शुल्क को समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग को परिणामी क्षति के साथ पाटन में बड़े पैमाने पर वृद्धि नहीं होगी अथवा वह जारी नहीं रहेगा।
- कि इस अवधि में घरेलू उद्योग को सम्बद्ध देश सहित विभिन्न देशों से पाटन के कारण क्षति हुई है। विश्व भर में उत्पाद की बेशी अप्रयुक्त क्षमता के परिणामस्वरूप सामान्य मूल्य से कम कीमत पर उत्पाद का निर्यात किए जाने के परिणामस्वरूप सतत पाटन हुआ है और घरेलू उद्योग को सतत क्षति हुई है।
- कि यह एक समीक्षा जांच होने के कारण यह आवश्यक नहीं है कि पाटित आयातों की मात्रा में बढ़ती हुई प्रवृत्ति दिखाई दे। वस्तुतः यह आशा की जाती है कि आयातों की मात्रा में गिरावट आनी चाहिए। तथापि, थाइलैण्ड से आयातों की मात्रा काफी अधिक बनी रही है। वस्तुतः जांच अवधि में इसमें वृद्धि प्रदर्शित हुई है।

छ.1.3 अन्य हितबद्ध पार्टियों के विचार

34. इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन ने अपने अनुरोधों में ये तर्क दिए हैं :-

- कि थाइलैण्ड तथा संबंधित निर्यातक से आयातों में पर्याप्त गिरावट आई है और आवेदक निर्यातक द्वारा भारत को सम्बद्ध वस्तु के निर्यात में कोई खास वृद्धि किए जाने की निःसन्देह

कोई संभावना नहीं है क्योंकि इस निर्यातक का प्रमुख उत्पादन घरेलू बिक्री के लिए किया जाता है और भारत को हुए निर्यात का उसके कुल उत्पादन में काफी कम हिस्सा बनता है।

- सम्बद्ध वस्तु की घरेलू उत्पादकता में, कंसोलिडेटेड फाइबर्स एंड केमिकल्स लि. के बंद होने के कारण कमी आई है और इसलिए आपूर्ति में अंतर को पूरा करने के लिए आयात अनिवार्य हैं।
- कि स्टैपल फाइबर एक वस्तु है और वस्तु बाजार स्थिर हैं और ये अनुषंगी बाजारों पर निर्भर होते हैं और अनुषंगी बाजारों की माँग एक्रिलिक फाइबर की कीमत के लिए महत्वपूर्ण होती है। यह ऊनी धागे की कीमत पर भी निर्भर होता है और यह कॉटन पॉलिस्टर तथा विस्कोस आदि जैसे अन्य फाइबरों की कीमतों की प्रवृत्ति द्वारा भी प्रभावित होता है।
- कि यदि दीर्घावधि संरक्षण के बावजूद घरेलू उद्योग अपनी स्थिति को सुधारने में समर्थ नहीं होता है तो इसका तात्पर्य यह है कि घरेलू उद्योग को गंभीर अक्षमता के कारण घाटा हो रहा है न कि आयातों के कारण। कुशलता का सर्वाधिक संबंध प्रौद्योगिकी और संयंत्र की आयु से होता है।
- कि घरेलू उद्योग की गुणवत्ता इष्टतम स्तर की नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा प्रयुक्त प्रौद्योगिकी पुरानी और अप्रचलित है।

35. लुधियाना स्पिनर्स एसोसिएशन ने अपने संक्षिप्त अनुरोध में ये तर्क दिए हैं :-

- कि एफएएफएम की आड़ में पाटनरोधी शुल्क एक्रिलिक फाइबर का विनिर्माण करने वाले लगभग सभी देशों पर लगाया गया है। पूर्ववर्ती जांच में घरेलू उद्योग ने एक्रिलिक फाइबर के आयात हेतु संचयी आधार पर क्षति का दावा किया था। किन्तु स्थिति बदल गई है और घरेलू उद्योग को क्षति की मौजूदगी एक्रिलिक फाइबर की अनेक विनिर्माण इकाइयों के बंद होने और आयातों में गिरावट आने के कारण हुई है।
- कि थाइलैण्ड के निर्यातकों द्वारा कीमत में कोई कटौती नहीं की गई है और इसलिए घरेलू उद्योग को क्षति की कोई संभावना नहीं है।
- कि घरेलू उद्योग थाइलैण्ड से हुए निर्यातों के समान कीमत पर एक्रिलिक फाइबर का निर्यात भी कर रहा है।
- कि एक्रिलिक फाइबर के विनिर्माताओं ने पाटनरोधी शुल्क के प्रभाव में एकाधिकार का लाभ उठाया है और पाटन की ऐसी पुनरावृत्ति प्रतीत नहीं होती है जिससे घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होगी अथवा ऐसी क्षति की संभावना बनेगी।

36. प्रकटन के पश्चात किए गए अपने अनुरोधों में इंडियन स्पिनर्स एसोसिएशन और मिल ऑनर एसोसिएशन ने क्षति तथा कारणात्मक संबंध के बारे में तर्कों को दोहराया है।

छ.2. प्राधिकारी द्वारा जांच

37. प्राधिकारी ने विभिन्न पार्टियों द्वारा अपने अनुरोधों में दिए गए विभिन्न तर्कों पर गौर किया है और प्राधिकारी के समक्ष दिए गए इन तर्कों के आलोक में घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहने के मुद्दे की जांच की गई है। यह समीक्षा थाइलैण्ड के एक निर्यातक के अनुरोध पर शुरू की गई थी। आवेदक निर्यातक के समीक्षा आवेदन में घरेलू उद्योग की क्षति संबंधी स्थिति की समीक्षा करने का कोई अनुरोध नहीं किया गया था। तथापि, प्राधिकारी ने सम्बद्ध देश के संबंध में पाटन और क्षति दोनों को शामिल

करते हुए जांच शुरू की थी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियमावली के नियम 23 के अनुसार जांच शुरू करने के बाद प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित होता है कि क्या परिवर्तित परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए सम्बद्ध देश के सम्बन्ध में शुल्क को निरंतर लागू रखने की जरूरत है। जहाँ तक पाटन का सम्बन्ध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि सम्बद्ध देश से वर्तमान पाटन मार्जिन न्यूनतम स्तर से अधिक है। अतः प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई वर्तमान क्षति, यदि कोई हो, और ऐसी परिवर्तित परिस्थितियों के अंतिम स्वरूप तथा सम्बद्ध देश से आयातों के पाटन और उनके कारण हुई क्षति की संभावना के पहलुओं की जांच की।

छ.3. वर्तमान क्षति एवं कारणात्मक संबंध

38. पाटनरोधी करार के अनुच्छेद 3.1 तथा पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध- 11 में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पादों के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव; तथा (ख) पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच किए जाने का प्रावधान है। प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि क्या आयातों में आयातक देश में उत्पादन या खपत के समग्र रूप में या उसकी तुलना में आयातों में हुई खास वृद्धि हुई है। जहाँ तक पाटित आयातों के कीमत प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात की जांच करना अपेक्षित है कि आयातक देश में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में पर्याप्त कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमत में अन्यथा पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत वृद्धि में रूकावट आई है जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।

39. वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर सम्बद्ध देश से सम्बद्ध वस्तु के पाटित आयातों के मात्रा एवं कीमत संबंधी प्रभावों और कीमत एवं लाभप्रदता पर प्रभाव की जांच की है ताकि क्षति एवं पाटन तथा क्षति के बीच कारणात्मक संबंध, यदि कोई हो, की जांच की जा सके। प्राधिकारी नोट करते हैं कि अनेक देशों से आयात की जा रही सम्बद्ध वस्तु पर भी पाटनरोधी शुल्क लागू है। तदनुसार, पाटित आयातों की मात्रा और कीमत संबंधी प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है :

(क) मात्रा संबंधी प्रभाव : पाटित आयातों का मात्रा संबंधी प्रभाव और घरेलू उद्योग पर प्रभाव

40. सम्बद्ध देशों से पाटित आयातों की मात्रा तथा अन्य देशों से आयातों के प्रभाव की निम्नानुसार जांच की गई है :

(i) आयात की मात्रा एवं सम्बद्ध देशों का हिस्सा

41. घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों में आयात के सम्पूर्ण आंकड़े प्रदर्शित नहीं किए जाते हैं और आयात की मात्रा डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों में सूचित मात्रा से अधिक है। घरेलू उद्योग ने प्रकटन के बाद अपनी टिप्पणियों में आंकड़ों की असंगति का मुद्दा पुनः उठाया है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि थाइलैण्ड के आवेदक निर्यातक के निर्यात आंकड़ों में डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों में सूचित आयात की मात्रा से अधिक निर्यात की मात्रा दर्शाई गई है। अतः डीजीसीआई एंड एस के आंकड़ों तथा सम्बद्ध देश के आवेदक निर्यातक द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों को ध्यान में रखते हुए सम्बद्ध देश और अन्य देशों से हुए आयातों की मात्रा की निम्नानुसार जांच की गई है :

विवरण	यू ओ एम	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
आयात					जाँच अवधि
थाईलैंड	मी.टन	2272	2566	3448	3323
प्रवृत्ति		100	113	152	146
अन्य देश जिन पर शुल्क लागू है	मी.टन	14138	10461	9957	4259
प्रवृत्ति		100	74	70	30
अन्य देश जिन पर शुल्क लागू नहीं है	मी.टन	4683	791	1267	4615
प्रवृत्ति		100	17	27	99
कुल आयात	मी.टन	21093	13818	14672	12197
प्रवृत्ति	सूचकांक	100.00	66	70	58

42. आँकड़े दर्शाते हैं कि पिछले वर्ष की तुलना में जाँच अवधि के दौरान संबद्ध देश से आयात में मामूली गिरावट आई थी और आधार वर्ष की तुलना में उसमें 46 प्रतिशत वृद्धि हुई थी। अन्य देश, जिन पर शुल्क लागू है, उनसे आयातों की मात्रा में आधार वर्ष की तुलना में 30 प्रतिशत तक की अत्यधिक गिरावट आई है। तथापि, जिन अन्य देशों पर पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं है, उनसे आयातों में बीच की अवधि में अत्यधिक गिरावट के बाद फिर काफी वृद्धि हुई है, हालाँकि कुल आयात का स्तर आधार वर्ष की मात्रा का लगभग 58 प्रतिशत ही है।

(ii) माँग, उत्पादन एवं बाजार हिस्से

(क) घरेलू उद्योग का उत्पादन

घरेलू उद्योग की क्षमता व उत्पादन *	यू ओ एम	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
					जाँच अवधि
घरेलू उद्योग की स्थापित क्षमता	मी.टन	77500	77500	85000	85000
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	100	110	110
घरेलू उद्योग का कुल उत्पादन	मी.टन	69200	78325	84738	75378
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	113	122	109
घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग	%	89.29	101.06	99.69	88.68
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	113	112	99

* घरेलू उद्योग से भागीदार उत्पादक अर्थात् मै0 इंडियन एक्रिलिक लि0, मै0 वर्धमान एक्रिलॉन एवं मै0 पशुपति एक्रिलॉन अभिप्रेत हैं।

43. उपर्युक्त आँकड़े दर्शाते हैं कि घरेलू उद्योग की क्षमता में लगभग 10 प्रतिशत वृद्धि हुई है। तथापि, 2004-05 तक अच्छी वृद्धि दर्शाने के बाद जाँच अवधि में घरेलू उद्योग के उत्पादन में फिर गिरावट आई है। पिछले दो वर्षों में अत्यधिक सुधार दर्शाने के बाद जाँच अवधि में घरेलू उद्योग का क्षमता उपयोग घट कर फिर से आधार वर्ष के समतुल्य हो गया है।

(ख) घरेलू उद्योग की बिक्रियाँ

विवरण	यू ओ एम	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
					जाँच अवधि
प्रारंभिक स्टॉक	मी. टन	647	4625	1553	4380
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	715	240	677
उत्पादन	मी. टन	69200	78325	84738	75378
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	113	122	109
घरेलू बिक्री	मी. टन	60612	66114	65504	68249
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	109	108	113
निर्यात बिक्री	मी. टन	4620	15282	16407	6419
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	331	355	139
अंतिम स्टॉक	मी. टन	4625	1553	4380	5091
प्रवृत्ति	सूचकांक	100	34	95	110

44. घरेलू उद्योग की घरेलू और निर्यात बिक्रियों में भी आधार वर्ष की तुलना में अत्यधिक सुधार प्रदर्शित हुआ है। तथापि, अन्य दो घरेलू उत्पादकों अर्थात् आई पी सी एल और कंसॉलिडेटेड फाइबर के उत्पादन और बिक्री, जिसकी परिणति अंततः उनके द्वारा उत्पादन स्थगित किए जाने के रूप में हुई, के साथ घरेलू उद्योग की बिक्री की जाँच यह दर्शाती है कि घरेलू उद्योग ने इस अवधि के दौरान इन दो उत्पादकों द्वारा खाली किए गए स्थान को कुछ हद तक भरा है।

(ग) मॉग एवं बाजार हिस्सा

मात्रा: मी. टन में

	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
आयात				जाँच अवधि
थाईलैंड	2272	2566	3448	3323
प्रवृत्ति	100	113	152	146
अन्य देश जिन पर शुल्क लागू है	14138	10461	9957	4259
अन्य	4683	791	1267	4615
कुल आयात	21093	13818	14672	12197
प्रवृत्ति	100	66	70	58
घरेलू उद्योग की कुल बिक्री	60612	66114	65504	68249

प्रवृत्ति	100	109	108	113
अन्य घरेलू उत्पादक	34899	27500	31760	27138
प्रवृत्ति	100	79	91	78
कुल घरेलू माँग	116604	107432	111936	107584
प्रवृत्ति	100	92	96	92
माँग में हिस्सा				
घरेलू उद्योग	51.98	61.54	58.52	63.44
अन्य घरेलू उत्पादक	29.93	25.60	28.37	25.22
संबद्ध देश	1.95	2.39	3.08	3.09
अन्य देश जिन पर शुल्क लागू है	12.12	9.74	8.90	3.96

45. उपर्युक्त आँकड़े दर्शाते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में जाँच अवधि में घरेलू माँग में 8 प्रतिशत गिरावट दर्ज की गई। कुल आयातों के साथ-साथ अन्य देश, जिन पर शुल्क लागू है, से आयातों में अत्यधिक गिरावट आई है। संबद्ध देश से आयात की मात्रा और अन्य देश जिन पर शुल्क लागू नहीं है, से आयातों में वृद्धि हुई है। घरेलू उद्योग तथा सभी घरेलू उत्पादकों के बाजार हिस्से में आधार वर्ष की तुलना में वृद्धि हुई है। परन्तु घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में वृद्धि दो अन्य घरेलू उत्पादकों, जिन्होंने धीरे-धीरे अपना उत्पादन व बिक्री कम करते हुए अंततः पूर्णतः उत्पादन बंद कर दिया, द्वारा खाली किए गए स्थान के कारण अधिक प्रतीत होती है। इसी के साथ, संबद्ध देश के बाजार हिस्से में भी पिछले वर्ष की तुलना में मामूली और आधार वर्ष की तुलना में लगभग 50 प्रतिशत वृद्धि प्रदर्शित होती है।

(ख) घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों का कीमत प्रभाव

46. संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमतों पर पड़े प्रभाव की जाँच कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री, कीमत ह्रास एवं कीमत अवमूल्यन, यदि कोई हो, के संदर्भ में की गई है। इस विश्लेषण के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग की भारित औसत उत्पादन लागत, भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति (एन एस आर) तथा क्षतिरहित कीमत (एन आई पी) की तुलना संबद्ध देश से आयातों की पहुँच कीमत से की गई है।

(झ) कीमत कटौती एवं कम कीमत पर बिक्री के प्रभाव

47. जाँच की समग्र अवधि में संबद्ध देश से पाटित आयातों के भारित औसत पहुँच मूल्य की तुलना उसी अवधि के लिए घरेलू उद्योग की भारित औसत निवल बिक्री प्राप्ति से करके कीमत कटौती का निर्धारण किया गया है। इस प्रयोजनार्थ, संबद्ध देशों से आयात कीमतों के डी जी सी आई एंड एस आँकड़ों में सूचित मूल्य में 1 प्रतिशत प्रहस्तन प्रभार और अनुप्रयोज्य मूल सीमाशुल्क जोड़कर आयातों के पहुँच मूल्य का परिकलन किया गया है।

48. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का निर्धारण करते समय घरेलू उद्योग द्वारा दी गई रिबेट, छूटों तथा कमीशन और भुगतान किए गए केन्द्रीय उत्पाद शुल्क के लिए छूट दी गई है।

49. कम कीमत पर बिक्री के निर्धारण के प्रयोजनार्थ संबद्ध देशों से आयातों की भारत औसत पहुँच कीमत की तुलना जाँच अवधि के लिए निर्धारित घरेलू उद्योग की क्षतिरहित बिक्री कीमत और शेष वर्षों के लिए उत्पादन लागत से की गई है।

मूल्य रुपए/मी.टन में

विवरण	यू ओ एम	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
					जाँच अवधि
		*****	*****	*****	*****
बिक्री लागत	रुपए/मी.टन			*	
		*****	*****	*****	*****
बिक्री कीमत	रुपए/मी.टन			*	
पहुँच मूल्य (थाईलैंड)	रुपए/मी.टन	72314	77219	95053	94079
पहुँच मूल्य (अन्य देश जिन पर शुल्क लागू है)	रुपए/मी.टन	80888	80281	98490	94103
पहुँच मूल्य अन्य	रुपए/मी.टन	72249	77660	97519	94078
कीमत कटौती (थाईलैंड)	रुपए/मी.टन				(-)*****
कीमत कटौती (थाईलैंड)	%				(-)5 to 15%
क्षतिरहित कीमत	रुपए/मी.टन				****
कम कीमत पर बिक्री (थाईलैंड)	रुपए/मी.टन				****
कम कीमत पर बिक्री (थाईलैंड)	%				5 to 15%

50. प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध देशों से आयातों का पहुँच मूल्य घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से अधिक था जिसकी परिणति ऋणात्मक कीमत कटौती में हुई थी। परन्तु संबद्ध देशों से पाटित आयातों के पहुँच मूल्य से अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री का आभास मिलता है। तथापि, कम कीमत पर बिक्री को घरेलू बाजार में कीमत ह्रास एवं अवमूल्यन के साथ देखा जाना होता है क्योंकि घरेलू बाजार में अत्यधिक कीमत ह्रास या अवमूल्यन की स्थिति में आयात कीमतों से ऋणात्मक कीमत कटौती हो सकती थी।

(ii) पाटित आयातों के कीमत ह्रास एवं अवमूल्यन संबंधी प्रभाव

51. पाटित आयातों के कीमत ह्रास संबंधी प्रभाव की जाँच संबद्ध देशों की उत्पादन लागत, निवल बिक्री प्राप्ति और पहुँच मूल्यों के संदर्भ में की गई है। उपर्युक्त आँकड़े दर्शाते हैं कि संबद्ध देशों की उत्पादन लागत में आधार वर्ष और पिछले वर्ष की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है। उत्पादन लागत में वृद्धि ए सी एन जो एक्रिलिक फाइबर की मूल कच्ची सामग्री है, की कीमत में वृद्धि से जुड़ी हुई है। ए सी एन के आयात आँकड़े 2004-05 और 2005-06 के दौरान 8

रूप/प्रति किग्रा. की वृद्धि दर्शाते हैं। तथापि, संबद्ध देश से पाटित आयातों की आयात कीमत और पहुँच मूल्य में कोई विशेष वृद्धि दर्ज नहीं की गई है। इसी के साथ, पिछले वर्ष सुधार के बाद जाँच अवधि में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत में अत्यधिक गिरावट आई है जिससे अत्यधिक कीमत अवमूल्यन का संकेत मिलता है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की माँग में काफी गिरावट आई है जबकि कई स्रोतों से पाटित आयात जारी हैं। अतः ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग अपने बाजार हिस्से को बनाए रखने के लिए अपनी कीमतें कम रखने को बाध्य हुआ है।

छ.4 अन्य क्षति मापदण्डों की जाँच

52. अन्य आर्थिक मापदण्ड, जिनसे घरेलू उद्योग को क्षति का संकेत मिल सकता था, का विश्लेषण निम्नानुसार किया गया है:-

(i) उत्पादकता

53. घरेलू उद्योग की उत्पादकता की माप उत्पादन की उसकी श्रम उत्पादकता के अनुसार की गई है और यह देखा गया है कि उत्पादन में वृद्धि के कारण उत्पादकता में वृद्धि हुई है जबकि आधार वर्ष की तुलना में रोजगार का स्तर समान बना रहा है।

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
					जाँच अवधि
उत्पादकता	प्रति कर्मचारी	50.04	59.56	62.91	54.50
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	119.04	125.73	108.93
उत्पादकता	मी.टन/दिन	192	218	235	209
प्रति दिन उत्पादकता - (एक वर्ष में 360 दिन उत्पादन पर विचार करते हुए)					

(ii) लाभ एवं नकद प्रवाह पर वास्तविक एवं संभावित प्रभाव

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06 (जाँच अवधि)
बिक्री लागत	रूपये/मी.टन	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	99.09	107.11	123.54
बिक्री कीमत	रूपये/मी.टन	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105	124	117
लाभ/हानि	रूपये/मी.टन	(*****)	*****	*****	(*****)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	1652	5000	(2200)
घरेलू बिक्री पर कुल लाभ/हानि	लाख रूपये	(*****)	*****	*****	(*****)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	1802	5404	(2477)

अवमूल्यन	लाख रुपये	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	100	98	101
नकद लाभ/हानि	लाख रुपये	*****	*****	*****	(*****)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	182	334	(1)

54. लाभ और हानि के अनुसार घरेलू उद्योग का निष्पादन यह दर्शाता है कि 2004-05 तक अत्यधिक सुधार के बाद जाँच अवधि में घरेलू उद्योग को अचानक ही अत्यधिक घाटा होना शुरू हो गया है। यह घाटा जाँच अवधि में उत्पादन लागत में अत्यधिक वृद्धि होने के कारण है क्योंकि उसी अवधि में बिक्री कीमतों में मंदी बनी रही है।

(iii) रोजगार एवं वेतन

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
रोजगार					जाँच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	1383	1315	1347	1383
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	95.08	97.40	100.00
मजदूरी	लाख रुपये	1808	1915	1977	2162
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	105.92	109.35	119.58
प्रति कर्मचारी मजदूरी	लाख रुपये	1.31	1.46	1.47	1.56
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	111.40	112.27	119.58

55. रोजगार स्तर तथा वेतन से घरेलू उद्योग की स्थिति में किसी गिरावट का पता नहीं चलता है। सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था में वेतन के स्तरों में सामान्य वृद्धि की दृष्टि से 4 वर्षों की अवधि में वेतन में 20 प्रतिशत की वृद्धि अधिक नहीं है।

(iv) निवेश पर आय तथा पूंजी उगाहने की क्षमता

विवरण	यू ओ एम	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06 (जाँच अवधि)
लगाई गई पूंजी - एन एफ ए + कार्यशील पूंजी	लाख रुपये	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	85	89	90
लाभ	लाख रुपये	(*****)	*****	*****	(*****)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	(100)	1802	5404	(2477)
ब्याज	लाख रुपये	*****	*****	*****	*****
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	93.14	65.90	61.51
पी बी आई टी	लाख रुपये	*****	*****	*****	(*****)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	130	197	-11
लगाई गई पूंजी पर आय - एन एफ ए + कार्यशील पूंजी	%	*****	*****	*****	(*****)
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	153.08	222.75	(11.73)

56. उपर्युक्त आंकड़ों से पता चलता है कि घरेलू उद्योग की लाभप्रदता में वर्ष 2004-05 तक अत्यधिक सुधार होने के बाद गिरावट आई है और यह लागत में बढ़ोतरी के कारण नकारात्मक हो गई है जबकि कीमतों में मंदी है।

(v) निवेश

57. घरेलू उद्योग ने पी ओ आई के दौरान कोई खास क्षमता वृद्धि अथवा पूंजी निवेश नहीं किए हैं।

(vi) पाटन की मात्रा

58. संबद्ध देश और आवेदक निर्यातक हेतु निधारित पाटन मार्जिन न्यूनतम स्तर से अधिक है।

(vii) कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

59. हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि अन्य कारक जैसे बुनाई उद्योग के स्तर पर अन्तर फाइबर प्रतिस्पर्धा और पी ओ आई के दौरान भारत में एकीलिक फाइबर की कम मांग से घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित और बिक्री की गई संबद्ध वस्तुओं पर प्रभाव पड़ा है। प्राधिकारी ने पाटित आयातों से इतर कारकों जो घरेलू बाजार की कीमतों को प्रभावित कर सकते हैं, का विश्लेषण करने के लिए लागत ढांचे में परिवर्तन, घरेलू उद्योग और प्रतिस्पर्धी स्थापनों की कीमतों में प्रतिस्पर्धा की जांच की है। एकीलिक फाइबर ऊन का एक कम खर्चीला स्थानापन्न है और इसके परिणामस्वरूप, घरेलू और औद्योगिक क्षेत्रों में कई अनुप्रयोग होते हैं और इसका ऐसा होना जारी है क्योंकि स्थानापन्न उत्पाद की कीमत उच्च स्तर पर बनी हुई है। तथापि, पी ओ आई के दौरान घरेलू मांग में लगभग 8 प्रतिशत की कमी आयी है। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुओं के प्रतिभागी उत्पादकों का कुल घरेलू मांग में लगभग 64 प्रतिशत हिस्सा बनता है और अन्य उत्पादकों की कीमत भी समान कीमत बैंडों के भीतर रहती है। प्राधिकारी के ध्यान में यह बात भी लायी गयी है कि संबद्ध वस्तु के दो अन्य उत्पादक अपने उत्पादन में अत्यधिक कमी कर रहे थे और उन्होंने अंततः उत्पादन को बंद कर दिया है हालांकि ऐसा जांच अवधि के बाहर किया गया है। अतः ऐसा मालूम होता है कि देश में मांग की स्थिति और विभिन्न देशों से पाटित आयातों की मात्रा एवं कीमतों सहित अनेक कारकों से उसी समय घरेलू उद्योग की कीमतें प्रभावित होती हैं।

(viii) मालसूचियां

विवरण	इकाई	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
					जांच अवधि
अवधि की अंत में मालसूचियां	मी.टन	4625	1553	4380	5091
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	34	95	110
उत्पादन के % के रूप में मालसूचियां	%	6.68	1.98	5.17	6.75
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	30	77	101

60. घरेलू उद्योग के मालसूची स्तर में पी ओ आई के दौरान मामूली वृद्धि प्रदर्शित होती है ।

छ.5 अन्य ज्ञात कारक एवं कारणात्मक संबंध

61. जैसा कि पूर्व में रिकॉर्ड किया गया है निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों ने जांच के दौरान अपने लिखित निवेदनों में कई तर्क दिए हैं जिनमें मूल रूप से यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग ने अपने समग्र निष्पादन में सुधार किया है और क्षति यदि कोई हो, तो पाटित आयातों से इतर कारकों के कारण हुई है । हितबद्ध पक्षकारों के तर्कों की अनिवार्य कारकों और अन्य कारकों जिनसे घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ा हो सकता है, के संदर्भ में निम्नानुसार जांच की गई है:

(i) अन्य स्रोतों से आयातों की मात्रा एवं कीमतें

62. पी ओ आई के दौरान संबद्ध देशों से इतर कई अन्य देशों से आयात हुए हैं जिनमें वे देश भी शामिल हैं जिनके विरुद्ध पाटनरोधी शुल्क लागू है । आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि उन देशों से आयातों में अत्यधिक कमी आयी है जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू है । उन देशों से आयातों में पिछले वर्ष तक हुई अत्यधिक गिरावट के बाद वृद्धि हुई है जिन पर पाटनरोधी शुल्क लागू नहीं है । तथापि वस्तुएं कई देशों से आयात की गई हैं और अलग-अलग देशों से आयात की मात्राएं कम और समान कीमत बैंडों पर हैं ।

(ii) मांग में संकुचन और/अथवा खपत की पद्धति में परिवर्तन

63. विचाराधीन उत्पाद की कुल घरेलू मांग में पी ओ आई के दौरान पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में 4 प्रतिशत की और आधार वर्ष की तुलना में 8 प्रतिशत की मामूली गिरावट प्रदर्शित हुई है । हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि मांग में कमी बहु-फाइबर नीति और कर ढांचे में विसंगति के कारण यार्न स्तर पर अन्तर-फाइबर प्रतिस्थापन के कारण है । तथापि, घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्रियों से संकेत मिलता है कि मांग में संकुचन से इस तथ्य के मद्देनजर कि घरेलू उद्योग के उत्पादन एवं बिक्रियों में पी ओ आई के दौरान बढ़ोतरी हुई है, भौतिक मानदंडों में घरेलू उद्योग पर प्रभाव पड़ा हुआ प्रतीत नहीं होता है ।

(ii) विदेशी एवं घरेलू उत्पादकों की व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं और उनके बीच प्रतिस्पर्धा

64. संबद्ध वस्तुएं मुक्त रूप से आयात योग्य हैं और घरेलू बाजार में कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक प्रथाएं नहीं हैं । प्रतिभागी घरेलू उद्योग का देश में क्षमता के 70 प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा है । यद्यपि विभिन्न अन्य स्रोतों से आयातों की बड़ी मात्राओं पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है तथापि, इन स्रोतों से आयातों का पाटनरोधी शुल्क अप्रदत्त पहुँच मूल्य एक बहुत ही संकुचित बैंड के भीतर हैं जिनसे घरेलू बाजार हेतु विभिन्न स्रोतों के बीच कड़ी प्रतिस्पर्धा का संकेत मिलता है ।

(iii) प्रौद्योगिकी का विकास एवं निर्यात निष्पादन

65. हितबद्ध पक्षकारों ने तर्क दिया है कि घरेलू उद्योग की प्रौद्योगिकी और संयंत्र पुराने एवं जीर्णोद्धार हैं। प्राधिकारी नोट करते हैं कि विश्व भर में एक्रिलिक फाइबर का विनिर्माण या तो शुष्क प्रौद्योगिकी या आर्द्र प्रौद्योगिकी का प्रयोग करके किया जाता है। देश में पाँच उत्पादकों में से दो उत्पादक शुष्क प्रौद्योगिकी और तीन उसी उत्पाद का उत्पादन करने के लिए आर्द्र प्रौद्योगिकी का प्रयोग करते हैं। प्रौद्योगिकीय मानकों एवं प्रचालन लागत के लिहाज से कोई खास अंतर नहीं है। अतः प्रौद्योगिकीय अंतर घरेलू उद्योग के निष्पादन को प्रभावित करने वाला एक कारक नहीं है।

66. घरेलू उद्योग द्वारा विचाराधीन उत्पाद के निर्यातों में आधार वर्ष से अत्यधिक बढ़ोतरी हुई है।

विवरण		2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
मात्रा मी.टन					जाँच अवधि
निर्यात बिक्री	मी.टन	4620	15282	16407	6419
प्रवृत्ति	सूची	100	331	355	139

67. हितबद्ध पक्षकारों ने यह बात उठाई है कि याचिकाकर्ताओं द्वारा निर्यात कम कीमतों पर किए गए हैं जिनसे उनको क्षति पहुँची हो सकती है। लेकिन निर्यातों की मात्रा उनकी घरेलू बिक्रियों के 10 प्रतिशत से कम है और कीमत अंतर भी कोई खास नहीं है जिससे घरेलू उद्योग की क्षति में अत्यधिक अंशदान मिला हो। तथापि घरेलू उद्योग की क्षति का आकलन केवल उसके घरेलू निष्पादन के आधार पर किया गया है और उसके निर्यात निष्पादन को हुई क्षति पाटित आयातों के कारण नहीं है।

(iv) घरेलू उद्योग की उत्पादकता

68. श्रम उत्पादन और दैनिक उत्पादन के लिहाज से घरेलू उद्योग की उत्पादकता में अत्यधिक सुधार हुआ है। अतः उत्पादकता एक ऐसा कारक नहीं है जो घरेलू उद्योग की क्षति के लिए जिम्मेदार हो। वास्तव में घरेलू उद्योग ने उत्पादकता में सुधार के जरिए अपने घरेलू प्रचालनों में अपने घाटों को कम करने का प्रयास किया है।

छ.6 क्षति एवं कारणात्मक संबंध का समग्र आकलन

69. प्रकटन के बाद के अपने निवेदनों में निर्यातक ने निवेदन किया है कि 100000 मी.टन के भारतीय बाजार का 5 से 6 लघु उत्पादकों द्वारा प्रबंध किया जा रहा है और उनके बीच अवांछनीय प्रतिस्पर्धा भारतीय एक्रिलिक फाइबर उद्योग की वर्तमान स्थिति के लिए जिम्मेदार है। 110000 मी.टन के बाजार में 10,000 मी.टन का आयात बमुश्किल ही क्षति का कारण हो सकता है। जहाँ तक ए सी एन में वृद्धि और विचाराधीन उत्पाद पर इसके प्रभाव का संबंध है, निर्यातक ने तर्क दिया है कि उनकी बिक्रियां अंतर्राष्ट्रीय कीमतों और बाजार स्थितियों के अनुसार की गई हैं जो सदैव ए सी एन की कीमत के अनुसार नहीं बढ़ सकती हैं। इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू बाजार में घटती हुई मांग स्थिति और अधिशेष क्षमता में प्रतिकूल कीमत प्रवृत्ति के साथ आयातों की किसी बड़ी मात्रा का घरेलू उद्योग पर अत्यधिक प्रभाव पड़ेगा जो इस मामले में दर्शाया गया है।

70. पूर्ववर्ती खंड में की गई जांच से पता चलता है कि यद्यपि घरेलू उद्योग के निष्पादन में भौतिक मानदंडों जैसे क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और बिक्रियों के लिहाज से सुधार हुआ है, लेकिन बिक्री कीमत में कमी और उत्पादन लागत में वृद्धि के कारण पी ओ आई के दौरान घरेलू उद्योग की वित्तीय स्थिति और खराब हो गयी है। ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग को क्षति संचयी रूप से पाटित आयातों के मात्रा एवं कीमत संबंधी प्रभावों तथा अन्य कारकों जैसे मांग में कमी के कारण हुई है जैसा कि ऊपर जांच की गई है।

छ.6 क्षति मात्रा एवं क्षति मार्जिन

71. घरेलू उद्योग के लागत संबंधी आंकड़ों को ध्यान में रखकर घरेलू उद्योग हेतु निर्धारित संबद्ध वस्तुओं की क्षतिरहित कीमत की क्षति मार्जिन के निर्धारणार्थ संबद्ध देश से आयातों के पहुँच मूल्य के साथ तुलना की गई है जो निम्नानुसार परिकलित होती है:

क्षति मार्जिन		थाई एक्रिलिक	अन्य
सी आई एफ कीमत	रुपये/किग्रा.	*****	*****
पहुँच मूल्य	रुपये/किग्रा.	95611	82532
एन आई पी	रुपये/किग्रा.	*****	*****
क्षति मार्जिन	रुपये/किग्रा.	*****	*****
क्षति मार्जिन %	%	0-10%	15-25%

ज. परिवर्तित परिस्थितियों का स्थायी स्वरूप और क्षति के जारी रहने अथवा पुनरावृत्ति होने की संभावना

72. ए डी ए के अनुच्छेद 1.2 में यह प्रावधान है

कि प्राधिकारी किसी हितबद्ध पक्षकार के अनुरोध पर जिसमें समीक्षा की जरूरत को सही ठहराते हुए सकारात्मक सूचना प्रस्तुत की गई हो जहाँ आवश्यक हो अपने आप से अथवा बशर्ते निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने से एक युक्तिसंगत समयावधि बीत गई हो, शुल्क को जारी रखने की जरूरत की समीक्षा करेंगे। हितबद्ध पक्षकारों के पास प्राधिकारियों को यह जांच करने के लिए अनुरोध करने का अधिकार होगा कि क्या पाटन को निष्प्रभावी करने के लिए शुल्क को लागू रखना आवश्यक है, क्या यदि शुल्क को हटाया जाता है तो क्षति के जारी रहने अथवा पुनः होने की संभावना होगी। यदि इस पैराग्राफ के अंतर्गत समीक्षा के परिणामस्वरूप प्राधिकारी यह निर्धारण करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क की आगे जरूरत नहीं है तो यह तत्काल समाप्त कर दिया जाएगा।

73. भारत की पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 में प्राधिकारी के लिए समय-समय पर शुल्क को लागू रखने संबंधी जरूरत की जांच करना अपेक्षित है। निर्यातक ने अपने निवेदन में तर्क दिया है कि मध्यावधि समीक्षा जांच में संभावना के पहलुओं की जांच की अपेक्षा नहीं होती है जैसा कि निर्णायक समीक्षा के मामले में होता है। तथापि, प्राधिकारी का विचार है कि ऐसी किसी जांच में परिवर्तित परिस्थितियों के स्थायी स्वरूप और शुल्क वापस लिए जाने की स्थिति में संभावना संबंधी परिदृश्य की जांच भी शामिल होगी। यह निर्धारण करने के लिए कि क्या परिवर्तित परिस्थितियाँ स्थायी स्वरूप की हैं और क्या यदि शुल्क वापस लिए जाते हैं तो घरेलू उद्योग को क्षति जारी रहेगी अथवा इसकी पुनरावृत्ति होगी, आवेदक निर्यातक की बिक्रियों की मात्रा की प्रवृत्ति और घरेलू बाजार

और तीसरे देश के निर्यात बाजारों में इसकी कीमतों और घरेलू उद्योग पर पड़ने वाले उनके संभावित प्रभाव की जांच की गई है।

74. इस संबंध में घरेलू उद्योग ने अन्य बातों के साथ-साथ निवेदन किया है:

- कि आम तौर पर संबद्ध देश से निर्यातक और विशेष रूप से समीक्षा हेतु आवेदक भारतीय बाजार में अब भी माल का पाटन कर रहे हैं। यद्यपि कच्चे माल की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि हुई है लेकिन आवेदक की निर्यात कीमत में आनुपातिक वृद्धि प्रदर्शित नहीं हुई है जिससे निर्यातक द्वारा लागत के अवशोषण का संकेत मिलता है;
- कि घरेलू उद्योग को संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण निरन्तर क्षति हो रही है और यदि पाटनरोधी शुल्क वापस लिया जाता है तो घरेलू उद्योग को क्षति पुनः होगी अथवा और अधिक होगी;
- कि संबद्ध देशों से आयातों की मात्रा में पाटनरोधी शुल्क लगाने के बाद बढ़ोतरी हुई है जबकि पाटनरोधी शुल्क आकर्षित करने वाले अन्य देशों से आयात में अत्यधिक गिरावट आई है जिससे शुल्कों में परिवर्तन किए जाने या वापस लिए जाने के बाद पाटन के बढ़ने की संभावना का संकेत मिलता है;
- कि घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमतें कम करके इस स्थिति के अनुसार काम कर रही है हालांकि अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में कच्चे माल की कीमतों में बढ़ोतरी के कारण उत्पादन लागत में बढ़ोतरी हुई है;
- कि संबद्ध देशों में उत्पादकों, विशेष रूप से थाईलैंड से आवेदक निर्यातक के पास अत्यधिक अधिशेष क्षमताएं हैं और संबद्ध देश में मांग उनके द्वारा सृजित क्षमताओं से अत्यधिक कम है। अतः इस बात की अत्यधिक संभावना है कि शुल्क वापस लेने से आयातों में वृद्धि होगी और घरेलू उद्योग को गंभीर क्षति होगी।

75. प्राधिकारी ने इन तर्कों की आवेदक निर्यातक की क्षमता एवं उत्पादन तथा इसकी घरेलू बिक्रियों और भारत तथा अन्य देशों को किए गए निर्यातों के कीमत स्तरों संबंधी सूचना के आलोक में जांच की है। प्राधिकारी ने उन कीमत स्तरों की भी जांच की है जिन पर लागू शुल्क और इसके कीमत कटौती एवं कम कीमत पर बिक्री स्तरों मांग के परिदृश्य, कच्चे माल की लागत की प्रवृत्ति आदि के बावजूद संबद्ध देशों से वस्तुएं भारतीय बाजार में प्रवेश कर रही हैं ताकि परिवर्तित परिस्थितियों के स्थायी स्वरूप और घरेलू उद्योग की क्षति के जारी रहने या पुनः होने की संभावना की जांच की जा सके।

76. इस संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि कुल निर्यात आवेदक निर्यातक की कुल बिक्रियों का लगभग 70 प्रतिशत है और भारत को इसके निर्यात इसके कुल निर्यातकों का लगभग 6 प्रतिशत है। भारत को इसके निर्यातों की मात्रा में पिछले तीन वर्षों में लगभग 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि इसकी घरेलू बिक्रियों में लगभग 9 प्रतिशत की कमी आयी है। अतः कंपनी थाईलैंड में घरेलू मांग से काफी अधिक पर्याप्त अधिशेष क्षमता है और कंपनी निर्यात बाजार पर बहुत अधिक निर्भर है। भारतीय बाजार निर्यातक हेतु एक आयात बाजार बना हुआ है।

77. आवेदक द्वारा अपने घरेलू बाजार भारतीय बाजार और अन्य तीसरे देश के निर्यात बाजारों में बेचे गए उत्पाद के कीमत स्तर से संकेत मिलता है कि पी ओ आई के दौरान भारत को निर्यातों हेतु कीमतों में वृद्धि अन्य बाजारों की कीमतों की तुलना में उच्च प्रतिशत में रही है जबकि इन आयातों पर पाटनरोधी शुल्क लग रहा है। यद्यपि संबद्ध वस्तुओं के पहुँच मूल्य से अत्यधिक कीमत मंदी के कारण पी ओ आई के दौरान भारत में घरेलू बिक्री कीमतों में कटौती नहीं हुई थी लेकिन कम कीमत पर बिक्री बहुत अधिक थी।

78. यह भी नोट किया जाता है कि पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद संबद्ध देश से पाटन जारी है। जहाँ तक घरेलू उद्योग को हुई क्षति के जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने का संबंध है, शुल्क लागू होने के बावजूद वह कीमत स्तर जिन पर संबद्ध देश से भारतीय बाजार में वस्तुएं प्रवेश कर रही हैं, एक महत्वपूर्ण संकेतक है। उपयुक्त कारकों से यह संकेत मिलता है कि भारत को निर्यात कीमतों में परिवर्तन आवेदक निर्यातक की कीमतों की सामान्य प्रवृत्ति की तर्ज पर नहीं है और इसलिए निर्यात कीमतों में हुआ परिवर्तन समाप्त होने वाले प्रवृत्ति का प्रतीत नहीं होता है।

79. यह भी नोट किया जाता है कि जांच अवधि के दौरान कोई कीमत कटौती नहीं हुई थी यद्यपि संबद्ध देशों जिसमें समीक्षा हेतु आवेदक भी शामिल है, से निर्यातकों द्वारा कम कीमत पर काफी बिक्री का संकेत मिलता है और भारत को आवेदक निर्यातक के निर्यात की मात्रा में वृद्धि हुई है। तीसरे देशों को आवेदक की निर्यात की मात्रा भी काफी अधिक है और कीमत स्तर भी भारत की कीमतों तथा निर्यातक के घरेलू बाजार की कीमतों से कम है। अतः निर्यातक का निर्यातोन्मुख होना बिल्कुल स्पष्ट है। थाईलैंड से आवेदक निर्यातक के निर्यातों की मात्रा और तीसरे देशों को उसका कीमत स्तर और भारत में मांग में गिरावट यह इंगित करती है कि यदि शुल्क हटाया जाता है तो भारत को कीमतों में गिरावट आ सकती है और निर्यात मात्राएं बढ़ सकती हैं। इसके अलावा, घरेलू बाजार में गिरती हुई मांग के परिदृश्य में कीमतों में कमी और मात्रा में वृद्धि से घरेलू उद्योग को क्षति होना जारी रहेगा और उसमें और वृद्धि होगी। प्राधिकारी यह भी नोट करते हैं कि अनेक वास्तविक मापदण्डों में घरेलू उद्योग की स्थिति में सुधार के बावजूद इस तथ्य के कारण वित्तीय निष्पादन में कोई सुधार नहीं हुआ है कि अनेक स्रोतों से पाटन अभी भी जारी है और घरेलू बाजार में उत्पाद की मांग मंदी है।

80. अतः प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि वे परिवर्तित परिस्थितियां जिनके आधार पर आवेदक निर्यातक ने समीक्षा की मांग की है, स्थायी प्रकृति की नहीं है और यदि वर्तमान पाटन मार्जिन के आधार पर शुल्कों को घटाया या हटाया जाता है तो पाटन और क्षति के जारी रहने या उनकी पुनरावृत्ति होने की प्रबल संभावना है।

झ. निष्कर्ष एवं सिफारिशें

81. निर्यातक द्वारा अनुरोध की गई समीक्षा की शुरुआत और समीक्षा करने के बाद और पूर्वोक्त पैराग्राफों में यथाउल्लिखित विभिन्न मुद्दों की जांच करने के बाद प्राधिकारी का यह विचार है कि:

(क) आवेदक निर्यातक और थाईलैंड के अन्य निर्यातक द्वारा भारतीय बाजार में पाटित कीमतों पर और निर्धारित न्यूनतम स्तर से अधिक के पाटन मार्जिन पर संबद्ध वस्तुओं की बिक्री करना जारी है;

(ख) यद्यपि जांच अवधि के दौरान आवेदक निर्यातक के पाटन मार्जिन में काफी गिरावट दर्ज हुई है तथापि यह गिरावट स्थायी प्रकृति की नहीं है;

(ग) घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति होना जारी है और यह क्षति अन्य कारकों के संचयी प्रभाव के साथ पाटित आयातों के मात्रात्मक और कीमत प्रभावों के कारण हुई है;

(घ) पाटन और क्षति की परिवर्तित परिस्थितियां स्थायी प्रकृति की नहीं है और यदि शुल्क को घटाया या हटाया जाता है तो इनकी पुनरावृत्ति होने या उनके तीव्र होने की संभावना है।

82. उपर्युक्त के मद्देनजर प्राधिकारी संबद्ध आवेदक निर्यातक और समीक्षाधीन संबद्ध देश के विरुद्ध लागू शुल्कों में किसी संशोधन की सिफारिश नहीं करते हैं।

(ज) आगे की प्रक्रिया

83. इस सिफारिश के आधार पर केन्द्र सरकार के आदेशों के विरुद्ध कोई अपील अधिनियम के संगत प्रावधानों के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पादशुल्क और सेवा कर अपीलीय न्यायाधिकरण के समक्ष की जाएगी।

84. प्राधिकारी इस अधिनियम के संगत प्रावधानों और समय-समय पर इस संबंध में जारी सार्वजनिक सूचनाओं के अनुसार समय-समय पर इसमें यथा अनुशंसित निश्चयात्मक उपायों को जारी रखने, उनमें संशोधन करने या उन्हें समाप्त करने की आवश्यकता की समीक्षा कर सकते हैं। ऐसी किसी समीक्षा के अनुरोध पर प्राधिकारी द्वारा तब तक विचार नहीं किया जाएगा जब तक वह हितबद्ध पक्षकार द्वारा इस प्रयोजनार्थ निर्धारित समय-सीमा के अनुसार दायर नहीं की जाएगी।

आर. गोपालन, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY
(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 3rd October, 2007

FINAL FINDINGS

Sub : Mid-term Anti-dumping review investigations in the matter relating to imports of Acrylic Fibre from Thailand

No. 15/13/2006.— Having regard to the Customs Tariff Act 1975 as amended in 1995 (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, (hereinafter referred to as the Rules) thereof:

A BACKGROUND OF THE CASE

1. Whereas on the basis of an application filed by the domestic producer in India, the Designated Authority (herein after referred to as the Authority) initiated an antidumping investigation on 13.9.1996 and notified its final findings recommending definitive antidumping duty on import of Acrylic Fibre (hereinafter referred to as subject goods) originating in or exported from Thailand, USA and Korea RP, vide Notification No. 47/ADD/IW, dated 14.10.1997. Subsequently mid-term review was undertaken vide Notification No. 21/1/99-DGAD, dated 26.4.1999 and definitive anti dumping duty was recommended vide final findings Notification No. 21/1/99-DGAD, dated 19.4.2000. Sunset review of the anti dumping duty was initiated vide Notification No. 26/1/2001-DGAD, dated 07.8.2001 and the final findings were issued vide Notification No. 26/1/2001-DGAD, dated 06.8.2002. Definitive antidumping duty was re-imposed on the subject goods vide Customs Notification No. 106/2002-Customs, dated 09.10.2002.

2. And Whereas one of the exporters, of the subject goods from Thailand i.e., M/s. Thai Acrylic Fibre Company Ltd. have filed an application substantiating the need for mid term review of the anti-dumping duty imposed on the subject goods originating in or exported from Thailand. The applicant claimed that the conditions of dumping have changed substantially requiring a review of the anti-dumping measure in force in respect of this exporter. On the basis of the sunset review investigation the applicant exporter was subjected to anti dumping duty @US\$ 0.16/Kg. However, the applicant claimed that a period of 3 ½ years has already

been lapsed since the imposition of existing duty and the dumping margin determined in the sunset review at 12.39% had undergone significant changes due to change in market conditions, cost and prices of subject goods. Since the applicant filed positive evidence, prime facie establishing the need for a review of the dumping margin and rate of duty for the said exporter, the Authority initiated a mid-term review of the measure in force in so far as it concerned the above exporter and other exporters in Thailand (hereinafter referred to as the subject country), vide notification dated 3rd July 2006, under Section 9A (5) of the Act and Rule 23 of the Antidumping Rules, to determine whether the continued imposition of the duty is required in respect of the subject country, to offset dumping, and whether injury would be likely to continue or recur if the duty were removed or varied, or both. This investigation, however, did not cover other countries against which the measure was continued vide the sunset review findings dated 06.08.2002.

B. PROCEDURE

3. The procedure described below has been followed with regard to this investigation:
 - i) After initiation of the review investigation, in accordance with Rule 6(4), the Authority notified the domestic industry, all known exporters/producers in the subject country and known importers in India, calling for questionnaire responses and necessary information;
 - ii) In accordance with Rule 6(2), the Embassy of the subject country in New Delhi was informed about the initiation of the investigation with a request to advise the exporters/producers in the subject country to respond to the questionnaire within the prescribed time.
 - iii) Investigation was carried out for the period starting from 1st April 2005 to 31st March 2006 (12 months). However, injury examination was conducted for a period covering 2002-2003, 2003-2004, 2004-2005 and April 2005-March 2006 (POI).
 - iv) Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigations;
 - v) The following domestic producers of the subject goods have provided their cost and injury information for injury investigation.
 - a. M/s Indian Acrylic Ltd;
 - b. M/s Pashupati Acrylon;
 - c. M/s Vardhaman Acrylic
 - vi) Following other interested parties filed their responses to the initiation notification:
 - a) Indian Spinners Association;
 - b) Ludhiana Spinners Association;

- vii) The Authority has considered all views expressed and submissions made by various interested parties to the extent they are relevant for the present investigation.
- viii) The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties;
- ix) The Authority verified the information furnished by the domestic industry to the extent possible to examine the injury suffered and to work out optimum cost of production and cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) and the information furnished by the applicants so as to ascertain if Anti-Dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to Domestic Industry;
- x) The Authority also verified the data of the cooperating exporter and applicant for the subject review, to determine the normal value and dumping margin as per the Rules.
- xi) The Authority held a public hearing on 27th September 2006 to hear the interested parties orally, which was attended by representatives of the domestic industry, exporters of the subject goods from the subject countries. The parties attending the public hearing were requested to file written submissions of views expressed orally. The written submissions received from interested parties have been considered and incorporated in the disclosure to the extent they are relevant and substantiated with evidence;
- xii) Confidentiality claims of various interested parties in respect of the data submitted by them have been examined. The information, which is by nature confidential or which has been provided on a confidential basis by the interested parties, along with non-confidential summary thereof, has been treated confidential *** in this finding represents information furnished by the domestic industry on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- xiii) The essential facts of the case were disclosed to all interested parties in the form of confidential and general disclosures on 17th September 2007. Comments of the interested parties on the disclosure statement have been considered by the Authority, to the extent they are relevant and supported by evidence.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND 'LIKE ARTICLE'

4. The initiation notification notified that the product involved in the original investigation and this current review is Acrylic Fibre. Acrylic Fibre is a long chain of synthetic polymer composed of at least 85% by weight of Acrylonitrile, which is the major raw material for production of acrylic fibre. It is broadly described in terms of colour, length and denier of the fibre. It is used for the purpose of manufacturing

apparels, household items and it has a great industrial use. It is classified under Chapter 55 of the Customs Tariff Act, 1975. Acrylic fibre is classified under the heading 550330 of schedule-I of Custom Tariff Act and 55033000 as per Indian Trade Classification. No comment has been made by any interested party in respect of the product under consideration. Therefore, the product under consideration is hereby confirmed.

5. The Authority notes that Acrylic fibre falling under customs heading 5503.30 and Acrylic tow falling under customs heading 5501.30 have been treated as like articles in certain previous investigations concerning this product. However, this review investigation does not cover tow as a product under consideration since the original investigation did not cover this product. Therefore, only for the purpose of injury investigation acrylic tow has been treated as a like product. The products imported from the subject country and produced by the domestic industry are like articles in view of their physical and chemical characteristics, production process and technical and commercial substitutability. Therefore, the imported products and domestic products have been treated as like articles. The above classifications are, however, indicative only and are in no way binding on the scope of the present investigation.

D. Domestic Industry

6. In response to the initiation of the review investigation on the request of one exporter from Thailand, the Forum for Acrylic Fibre Manufacturers (FAFM) filed its response on behalf of the domestic producers of the subject goods in India. However, the exporter has submitted that FAFM has furnished information relating to only two domestic producers of the product concerned though there are many other producers in India. It was also argued that since the submission made by FAFM covers only two of the domestic producers, the domestic industry has not come forward to file the requisite information and appropriate adverse inference should be drawn on them by treating them as non-cooperative and the existing duties should be withdrawn.

7. The Authority notes that initially, acting on behalf of the domestic industry, the Forum for Acrylic Fibre Manufacturers filed the response in respect of two domestic producers namely, M/s Indian Acrylics and M/s Vardhaman Acrylon. Subsequently they have filed the data in respect of another domestic producer i.e. M/s Pashupati Acrylon. The Authority also notes that the other major producers of the subject goods i.e., M/s Consolidated Fibre and Chemicals and IPCL have suspended their production some time back (after the POI). The three responding producers command more than 50% of total production of the subject goods in India during the POI and therefore, are required to be treated as the domestic industry for the purpose of injury examination in the present case.

E. Other issues raised by Interested Parties

E.1 Views of the applicant for the review i.e., M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd.

8. The application for the review has been filed by M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd. The applicant, in its application seeking review and subsequent submissions, has made the following submissions:

- That market conditions have changed substantially requiring a review of the antidumping measures;
- That under the first proviso to Section 9A(5) of the Act, in a sunset review, the authority is required to examine whether cessation of existing duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. On the contrary, in a mid term review, the Authority is required to examine dumping and injury and re-determine the duty based on the results of the review. In terms of Rule 23, the Designated Authority is required to review the need for continued imposition of duty. If the authority is satisfied that there is no need for continued imposition, he shall recommend withdrawal of duties. However, if the Authority is not satisfied about the withdrawal but comes to a conclusion that it shall be continued, he shall determine at what rate the duties shall continue. He is required to determine whether the duties shall continue at the same rate or at a different rate. The rate may be lower or higher. For instance, in a mid term review, if the dumping margin determined by the authority is higher than what was determined in the original investigation, it would be unfair to continue the duty at the old level. Similarly, if the dumping margin has come down as compared to the original investigation, there is a case for reduction of the duty.
- That the current investigation would reveal that either the domestic industry does not suffer any injury or the injury suffered is not on account of the imports from the subject country. Therefore, there is no need for continued imposition of the duty in the present case.

9. In its post disclosure comments the applicant exporter has reiterated its stand that this being a mid term review, there is no legal basis for examination of continuation or recurrence of dumping and injury, which is required only in a sunset review.

E.2 Views of the domestic industry:

10. The domestic industry, in its various submissions, has opposed the initiation of the review and has *inter alia* submitted:

- that the duty shall expire on 8th October, 2007 if the five year period is counted from the date of extension i.e 9th October, 2002. Therefore, the sunset review was due in October, 2006. Therefore, the present application for MTR should be terminated and SSR investigation should be taken up by the Authority;
- that in previous four findings, the Authority has found significant dumping margin, on the basis of data/information filed by M/s. Thai Acrylic Fibre, though this exporter kept claiming de minimus dumping margins and the fact and circumstances in the current investigation period were such that the dumping margin could have at best substantially increased and not decreased as has been claimed by the exporters.

- that the exporter has not filed any information about likelihood of dumping. Thai Acrylic Fibre took a clear position at the time of oral hearing that the Designated Authority was not required to determine likelihood of dumping in a mid term review. The claim of Thai Acrylic Fibre is untenable, having regard to the Indian Rules and WTO Agreement Article 11.2.
- that the expression "whether the continued imposition of the duty is necessary to offset dumping" is synonym with "whether there is no justification for the continued imposition of such duty." It has been argued that the anti dumping duty can be withdrawn only if there is no justification for the continued imposition of the anti dumping duty. In other words, the anti dumping duty cannot be withdrawn merely because the dumping margin in period of investigation of review investigation has declined. Having established low dumping margin in the period investigation, exporter is thereafter required to establish that there is no justification for continued imposition of anti dumping duty by establishing that the dumping is unlikely to recur in the event of withdrawal of anti dumping duty.
- that Acrylonitrile is a major input for production of the subject goods. The increase in the oil prices was a global phenomenon which led to increase in the many petroleum based derivatives. Prices of Acrylonitrile increased very significantly during the present injury period.
- that in other jurisdictions like the EC and the US pricing behaviour of the exporter is examined, in detail, on invoice by invoice basis, in order to examine whether the exporter was likely to dump the goods in the importing market in the event of revocation of anti dumping duties.

11. In its post disclosure submissions the domestic industry has reiterated its stand that that exporter has not provided adequate information on third country export price for determining dumping margin in respect of third countries for likelihood examination. The domestic industry has further argued that dumping and consequent injury will intensify with reduction or withdrawal of anti dumping duties.

E.3 Views of the other interested parties:

12. M/s Indian Spinners Association and Ludhiana Spinners Association in their brief submissions have inter alia supported the contentions of the exporter M/s Thai Acrylic for review of the antidumping duty in force and have argued that there is no dumping from the applicant exporter and injury, if any, suffered by the domestic industry is not on account of dumping from the subject country.

13. In their post disclosure submissions the interested parties, including the domestic industry and applicant exporter, and the associations above have raised certain issues which have been examined and incorporated in the findings at relevant places, to the extent the issues raised are valid and duly substantiated.

E.4 Examination by the Authority

14. The Authority has carefully examined various submissions made by the interested parties in connection with the initiation of this review investigation.

15. Section 9A (5) read with Rule 23 of the Anti Dumping Rules provides that the Designated Authority shall, from time to time, review the need for continued imposition of anti dumping duty and if it is satisfied on the basis of information received by it that there is no justification for the continued imposition of such duty, shall recommend the Central Govt. for its withdrawal.

16. Article 11.2 of the Agreement provides that the authorities shall review the need for the continued imposition of the duty, where warranted, on their own initiative or, provided that a reasonable period of time has elapsed since the imposition of the definitive anti dumping duty, upon request by any interested party, which submits positive information substantiating the need for a review. Interested parties shall have the right to request the authorities to examine whether the continued imposition of the duty is necessary to offset dumping, whether the injury would be likely to continue or recur if the duty were removed or varied, or both. If, as a result of the review under this paragraph, the authorities determine that the anti dumping duty is no longer warranted, it shall be terminated immediately.

17. The Authority notes that in their application for review, the applicant exporter from Thailand had requested for a review of its dumping margins only and no plea was made for any review of the injury aspect. However, the Authority extended the scope of the review to cover the injury also, in so far as import from Thailand was concerned. Therefore, while reviewing the extent of dumping margin for the applicant exporter, the Authority is also required to examine whether continued imposition of duty is required in view of the changed circumstances. The Authority also notes that in other jurisdictions the practice evolved in this respect is to examine the lasting nature of the changed circumstances leading to decline in dumping margin or injury, for continued imposition of the duty. This, examination of lasting nature of changed circumstances would require examination of the likelihood aspect of dumping and injury. Accordingly, the Authority has examined the current dumping and injury as well as lasting nature of changed circumstances to determine the need for continued imposition of duty and quantum thereof.

F. DUMPING DETERMINATION

F.1 Continuance of Dumping: Determination of Normal Values, Export Prices and Dumping Margins: M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd, Thailand

18. Only one exporter/manufacturer from Thailand i.e. the applicant for the current review, M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd., has filed its domestic sales and export sales, as well as cost of production data, as per the questionnaire for determination of revised dumping margins as per their request for review. The information submitted by the exporter was also verified by the Authority as per the procedure prescribed and the dumping margin has been determined as follows:

a) Normal Value:

19. The applicant for the review filed a detailed questionnaire response with the details of domestic as well as exports sales of the subject goods manufactured and sold by them. For computation of Normal Value domestic sales of the subject goods,

in the ordinary course of trade, have been considered based on the verified data. Appropriate adjustments on account of discount, credit cost, guarantee commission and inland freight, as verified have been applied to arrive at the ex-works price of each transaction in the domestic market.

20. In its post disclosure comments the domestic industry has raised certain issues regarding the treatment of wastes in the cost of production, adjustments and ordinary course of trade test. The issue has been examined by the Authority. The Authority notes that the waste generated has been treated by product for the purpose of determination of cost of production of the product under consideration as per standard costing practice. All adjustments towards direct selling expenses have been made at the transaction level before ordinary course of trade test. Therefore, concerns of the domestic industry in respect of the wastes and adjustments have been taken care of and no change in the methodology of determination is required. The exporter has also pointed out a minor error in computation of the credit adjustment, which has been rectified. Accordingly, the Normal Value at ex-factory level works out as follows:

Computation of Normal Value	Qty Kg	Value Baht
Domestic Sales	*****	*****
Gross sales Price/MT		*****
Adjustments		
Discount already adjusted		
Interest computed at 4.55% being avg rate for short term loan during 2005		*****
Guarantee Commission as per Books of accounts		*****
Inland Freight		*****
Total Adjustment		*****
Ex-factory Normal Value (A) Baht/MT		*****

b) Export Price:

21. During the POI Thai Acrylic had exported *****MT Acrylic Fibre to India. The invoice-wise details of exports to India during the period of investigation were considered based on verified data. Adjustments as claimed by the exporter in Appendix-3 have been considered based on verified data and to arrive at the ex-factory export price to India. Details regarding their claim of adjustments were verified during the course of verification from the records maintained by the company. Accordingly, net ex-works export price works out as follows:

Ex-port Price	Qty in KG	Baht
CIF Price as per Appendix 2/MT	*****	*****
Export Incentives		*****
Share of gain on foreign exchange (App 9)		*****
Gross Export Price		*****
Less : Adjustments as per Appendix 2		
Ocean Freight		*****

Clearing & Forwarding		*****
Inland Freight		*****
Port Charges		*****
Insurance		*****
Total Adjustments		*****
Ex-factory Export Price Baht/MT (B)		*****

F.2 All other exporters from Thailand

a) Normal Value

22. No other exporter from Thailand made any submission before the Authority in response to this review investigation. Therefore, for all other exporters from Thailand the Authority has adopted the normal value determined for the cooperating exporter as the normal value for Thailand as a whole, in terms of Supreme Court Judgment in RIL matter.

b) Export Price

23. The net export price has been determined based on the lowest export transaction value from Thailand based on the export data of the cooperating exporter from Thailand, after allowing for adjustments towards transportation, ocean freight commission etc. Net export price works out to Baht *****per MT.

F.3 Dumping Margin

24. The normal value determined at the ex-factory level has been compared with the net export prices determined at the ex-factory level to determine the dumping margins as follows:

Dumping Margin Calculations	Normal Value Baht/ MT	Export Price Baht/ MT	Dumping Margin	Dumping Margin %
M/s Thai Acrylic, Thailand	*****	*****	*****	2.53%
All Others exporters from Thailand	*****	*****	*****	29.65%

25. The current dumping margins from the subject country have been found to be above de minimis.

F.4 Lasting Nature of the changed circumstances and likelihood of continuation or recurrence of dumping

26. In order to determine whether the changed circumstances of dumping is of lasting nature and whether the dumping would continue or recur in the future if the duties removed, the trend in volume of sales of the applicant exporter and its prices in the home market and third country export markets have been examined at the aggregate level.

27. It is noticed that the volume of exports of the applicant exporter to India has increased by almost 30% in the last three years whereas its domestic sales has declined by almost 9%. Exports of this exporter to other countries have increased by about 70%. Total exports constitute about 70% of total sales of the company and export to India is about ***% of total exports. Therefore, there is a significant surplus capacity of the company far beyond the domestic demand in Thailand and the company heavily depends on the export market and Indian market remains an important market for the exporter.

Volume of sales of Thai Acrylic in Kg	2004	2005	POI
1. EXPORTS TO INDIA	*****	*****	*****
Trend	100.00	134.38	129.52
2. DOMESTIC SALES	*****	*****	*****
Trend	100.00	94.26	91.43
3. EXPORTED TO OTHER COUNTRIES	*****	*****	*****
Trend	100.00	164.75	171.45
TOTAL	*****	*****	*****
Trend	100.00	130.98	132.80

28. The price data of the company shows that while the export price to India has increased by about 10% after imposition of duty, the domestic price has increased by only 7% and the export price to third countries has increased by only about 5%. The export price to third countries remains significantly lower than the export price to Indian market. The price trends indicate that the change in price to the Indian market is more due to the antidumping duty, rather than the general trend in prices of the company in other markets.

Prices of M/s Acrylic in Baht/Kg	2004	2005	POI
1. EXPORTS TO INDIA	*****	*****	*****
Trend	100.00	109.03	109.93
2. DOMESTIC SALES	*****	*****	*****
Trend	100.00	106.25	107.08
3. EXPORTED TO OTHER COUNTRIES	*****	*****	*****
Trend	100.00	104.73	104.88

29. The Authority also notes that Acrylic Fibre price is dependant upon the Acrylonitrile price which has increased significantly during this period and the rise in the price of main raw material might not have been fully reflected in the price structure of the exporter which shows a moderate increase. Therefore, the volume and price data shows that though the dumping margin in the current investigation period has come down, it may not be of a lasting nature and there is a significant possibility of recurrence of dumping by the applicant exporter from the subject country, if the duties are removed.

30. The Authority notes the arguments of the Indian Spinners Association and Mill Owners Association that it is not correct to contend that the price of a product should proportionately increase with every increase in the price of input. It has

been argued by these associations that what the Authority has stated is an ideal situation, which never exists in actual practice. Although the price of input may increase, the producer will not be able to pass on the input cost increase by increasing the price of the final output. After all price depends upon demand-supply question, impact of substitution effect and general economic conditions etc. It has been further argued that the major market of Thai Acrylic is not India, where export increased by 30%, but other countries where exports increased by 70%. Therefore, there is no reason to believe that changed circumstances would not be of lasting nature.

31. In this connection the Authority notes that both, volume of exports to India and other countries, as well as price trends, indicate that the price increase to India is an isolated phenomena which is not conforming to the general trend of price of the company in other markets. The prices of the exporter in its home market and in other export markets indicate that its export prices in other markets are also at significant dumped prices. The Authority also notes that export orientation of the company being quite prominent, it would be difficult to conclude that the change circumstances are of lasting nature and the price level to India would continue if the duties are revoked. Therefore, the Authority is of the view that the changed circumstances, in the form of decline in the level of dumping by the applicant exporter, is not of lasting nature and there is a significant possibility of recurrence of dumping by the applicant exporter from the subject country, if the duties are removed.

G. INJURY AND CAUSAL LINKS DETERMINATION

G.1 Views of the interested parties

G.1.1 Views of M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd, Thailand

32. The Authority notes that in its original application for review the applicant exporter from Thailand, M/s Thai Acrylic Fibre Company Ltd., did not make injury to the domestic industry as an issue for the review. However, subsequently, they have made the following arguments on the issue of injury to the domestic industry:

- That the domestic producers have indeed gained market share during the period of investigation and *inter se* competition between the domestic producers alone appears to be the cause of (a) fall in the market share of imports from subject countries and from other countries; (b) a significantly higher increase in market share achieved by some producers as compared to the others.
- That even if the duties are withdrawn, the probability of increase in imports from subject country appears to be thin.
- That the existing duties were imposed on 9th October, 2002. In the year 2003-04, the domestic sales of the two participating producers increased by 13%. However, even with anti dumping duties in force, the domestic sales went down by 10% during 2004-05, and it decreased by another 1% during 2005-2006.

- That the Director's Report of the domestic producers identifies the reasons for poor performance of the acrylic fibre business as the tax anomalies and high input prices adversely affecting the demand growth of Acrylic Yarn; inability of the spinning industry to utilize input stage excise duties in the case of production of yarns from man-made fibres resulting in a setback to the demand of synthetic and blended yarns; and erosion margins of acrylic producers.
- That price of acrylic yarn also remained depressed due to cotton yarn and polyester competition in India. It was also argued in the said report that a stand alone plant of acrylic fibre is likely to face huge losses due to under utilization of input credits on raw materials.
- The said reports also mention that the global demand of acrylic fibre in the year 2005 slipped to 2.64 million MT from 2.72 million MT in 2004, a drop of nearly 3%. A part of this drop could be attributed to inter-fibre substitution due to lower prices of cotton globally leading to drop in polyester consumption and its prices, which has in turn impacted acrylic fibre consumption and prices. Acrylic fibre producers' world over faced twin problems of falling fibre prices and surging acrylonitrile prices. The average spread available to acrylic fibre producers was one of the lowest in last more than five years.
- That the Indian domestic producers export a significant quantity of their production to other countries. They have suffered significant losses in their export sales. While determining the injury for the domestic industry, the loss suffered on account of exports should be excluded and the losses, if any suffered on domestic sales alone should be taken.
- Summarizing the above position the exporter has *ineter alia* argued that the injury suffered during 2005-2006 was due to factors other than dumping such as the following and dumped imports were not the cause of injury to the Indian domestic industry:-
 - Abolition of excise duty on cotton yarn without a similar treatment to man-made fibre;
 - Non availability of input credits on raw materials;
 - Demand supply mismatch due to increase in installed capacities;
 - Inter-fibre substitution;
 - Fall in apparent consumption of acrylic fibre in India;
 - Capacity enhancement by domestic fibre producers leading to lower capacity utilization that brought significant pressure on prices and margins.

G.1.2 Views of the Domestic Industry

33. The domestic industry, in its submissions has inter alia argued

- That the domestic industry has suffered injury from dumping of the product from a number of sources. A number of these sources are either attracting anti dumping duties or duties has been recently revoked. Thus, the injury to the domestic industry in this midterm review investigation is required to be seen in the light of existing duties.

- That the demand for acrylic fibre in India over past one decade has at best shown an increase. However, while the acrylic fibre capacity in the world is far beyond the demand, producers such as Thai Acrylic Fibre have been expanding capacities without proportionate increase in their domestic demand, obviously considering export markets. Such capacity expansions are naturally at the peril of other producers.
- That Thai Acrylic Fibre is also not as promising as is sought to be projected by the company before the Designated Authority as this company ended with a meager profit margin in 2005.
- That the imports are still continuing at dumped prices and extent of dumped imports has remained at significant levels in the present investigations. The circumstances which were prevalent at the time of original investigations are very much in existence even till date. There has been no change in the circumstances which only reflects that the dumping would recur at higher levels.
- That the capacity created by producer in Thailand is significantly higher than demand in their local market. Huge volume of exports made by the petitioner to third country market makes it evident that the volume of imports would increase significantly in the event of revocation of ADD. Further it is the understanding of the domestic industry that petitioner is also expanding its capacity.
- That the exports of the exporter to third countries are at significantly dumped prices.
- That it is evident that the domestic industry is facing continuous dumping of subject goods from the subject country and other countries. However, there is no reason or justification to believe that withdrawal of the duty would not lead to increased or continued dumping at large scale with consequent injury to the domestic industry.
- The domestic industry suffered injury due to dumping in this period from various countries, including subject country. The surplus unutilized capacity of the product world over is resulting in exports of the product below prevailing normal values which is resulting in continued dumping and continued injury to the domestic industry.
- That this being a review investigation, it is not necessary that the volume of dumped imports might show an increasing trend. In fact, it is expected that the volume of imports should decline. However, volume of imports from Thailand has remained quite significant. In fact, the same appears to have shown an increase in the investigation period.

G.1.3 Views of other interested parties

34. The Indian Spinners Association, in its submissions has argued

- That the imports from Thailand and the exporter concerned has decreased significantly and there is absolutely no possibility of any significant increase of exports of subject goods to India by the applicant exporter as major production of this exporter is for domestic sales and exports to India accounts for a very low share of its total production.

- That domestic availability of the subject goods is suffering because of the closure of M/s Consolidated Fibres and Chemicals Ltd. and therefore, imports are inevitable to meet the gap in supply.
- That the staple fibre is a commodity and commodity markets are volatile and depend on downstream markets and downstream demand holds the key for acrylic fibre price. It also depends upon the price of woolen yarn and is also affected by the trend in prices of other fibres like cotton polyester and viscose etc.
- That since India has accepted the multi-fibre policy; spinning industry can switch over from one fibre to another depending upon its comparative economics. Therefore the impact of downstream demand, woolen prices and price of other fibre is significant on the prices of acrylic fibre;
- That if, despite long standing protection, the domestic industry is not able to improve its position; it means that the industry is suffering from serious inefficiency and not because of imports. Efficiency is related very largely to the age of the technology and the plant.
- That the quality of the domestic industry is not upto the mark. The technology used by domestic industry is old and outmoded.

35. Ludhiana Spinners Association, in its brief submission has argued

- That antidumping duty has been imposed on almost all countries manufacturing acrylic fibre on the pretext of the FAFM. In the previous investigation the domestic industry claimed injury on cumulative basis for imports of acrylic fibre. But the scenario has changed and existence of injury to the domestic industry has almost ceased due to closure of several manufacturing units of acrylic fibre and fall in imports.
- That there is no price undercutting by the exporters from Thailand and therefore, no likelihood of injury to the domestic industry.
- That the domestic industry is also exporting Acrylic Fibre at identical prices of exports from Thailand;
- That the Acrylic Fibre Manufacturers have enjoyed monopoly under the effect of antidumping duty and there seems no recurrence of dumping that would lead to material injury to the domestic industry or likelihood of such injury.

36. In their post disclosure submissions the Indian Spinner's Association and Mill Owner's Association have reiterated the arguments in respect of injury and causal link.

G.2 Examination by the Authority

37. The Authority has taken note of various arguments raised by various parties in their submissions and issue of continuation of injury to the domestic industry has been examined in the light of these arguments made before the Authority. This review was initiated on the request of one exporter from Thailand. There was no request for review of the injury situation of the domestic industry in the review application of the applicant exporter. However, the Authority initiated the investigation covering both dumping and injury in respect of the subject country. The Authority notes that having initiated the investigation in terms of Rule 23 of the

Rules, the Authority is required to examine whether the continued imposition of the duty in respect of the subject country is required in view of the changed circumstances. As far as dumping is concerned, the Authority notes that the current dumping margins from the subject country are above de minimis level. The Authority has therefore, examined the current injury, if any, to the domestic industry and lasting nature of such changed circumstances, as well as the likelihood aspects of dumping and injury on account of imports from the subject country.

G.3 Current Injury and causal link

38. Article 3.1 of the ADA and Annexure II of the AD Rules provide for an objective examination of both, (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like products; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such products, with regard to the volume effect of the dumped imports. The authorities are required to examine whether there has been a significant increase in imports, either in absolute term or relative to production or consumption in the importing member. With regard to the price effect of the dumped imports, the authorities are required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like product in the importing country, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree, or prevent price increase, which would have otherwise occurred to a significant degree.

39. For the purpose of current injury analysis the Authority has examined the volume and price effects of dumped imports of the subject goods from the subject country on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal links between the dumping and injury, if any. The Authority notes that antidumping duty is also in force on the subject goods being imported from a number of countries. Accordingly, the volume and price effect of dumped imports have been examined as follows:

(A) VOLUME EFFECT: Volume Effect of dumped imports and Impact on domestic Industry

40. The effects of the volume of dumped imports from the subject countries, as well as imports from other countries, have been examined as follows:

i) Import volumes and share of subject countries:

41. The domestic industry has argued that the DGCI&S data does not reflect the complete import data and the import volume is higher than that has been reported in the DGCI&S data. The domestic industry has again raised the issue of data anomaly in its post disclosure comments. The Authority notes that the export data of the applicant exporter from Thailand shows higher volume of exports than the import volume reported in DGCI&S data. Therefore, volume of imports from the subject country and other countries have been examined taking into account DGCI&S data and the data submitted by the applicant exporter from the subject country as follows:

Particulars	UOM	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
IMPORTS					POI
Thailand	MT	2272	2566	3448	3323
Trend		100	113	152	146
Other Countries Attracting Duty	MT	14138	10461	9957	4259
Trend		100	74	70	30
Others not attracting duty	MT	4683	791	1267	4615
Trend		100	17	27	99
Total Imports	MT	21093	13818	14672	12197
Trend	Index	100.00	66	70	58

42. The data shows that the import from the subject country has marginally declined in the POI compared to the previous year and increased by about 46% compared to the base year. Imports from the other countries attracting duty has been drastically reduced to about 30% of the volume in the base year. However, import from other countries not subject to antidumping duty shows significant increase after a steep decline in the intervening period though total import is at about 58% level of the volume in the base year.

ii) **Demand, Output and Market shares**

a) **Production of the Domestic Industry**

Capacity & Production of DI *	UOM	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
					POI
Installed capacity of DI	MT	77500	77500	85000	85000
Trend	Index	100	100	110	110
Total production of DI	MT	69200	78325	84738	75378
Trend	Index	100	113	122	109
Capacity utilization of DI	%	89.29	101.06	99.69	88.68
Trend	Index	100	113	112	99

*DI constitutes the participating producers i.e., M/s Indian Acrylic Ltd., M/s Vardhaman Acrylon and M/s Pashupati Acrylon.

43. The above data shows that there is about 10% growth in capacity of the domestic industry. However, production of the domestic industry after showing an impressive growth till 2004-05 has again declined in the POI. Capacity utilization of the domestic industry, after showing a very significant improvement in the previous two years, has dropped again to the base year level in POI.

b) **Sales of Domestic Industry**

Particulars	UOM	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
					POI
Opening Stock	MT	647	4625	1553	4380
Trend	Index	100	715	240	677

Production	MT	69200	78325	84738	75378
Trend	Index	100	113	122	109
Domestic sales	MT	60612	66114	65504	68249
Trend	Index	100	109	108	113
Export sales	MT	4620	15282	16407	6419
Trend	Index	100	331	355	139
Closing Stock	MT	4625	1553	4380	5091
Trend	Index	100	34	95	110

44. Domestic as well as export sales of the domestic industry also show significant improvement compared to the base year. However, increase in sales of the domestic industry, examined alongside the decline in production and sales of the other two domestic producers i.e. IPCL and Consolidated fibres, eventually leading to their suspension of production, shows that the domestic industry was occupying some space vacated by these two producers during this period.

c) Demand and Market Share

	Qty in MT			
	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
IMPORTS				POI
Thailand	2272	2566	3448	3323
Trend	100	113	152	146
Other Countries Attracting Duty	14138	10461	9957	4259
Others	4683	791	1267	4615
Total Imports	21093	13818	14672	12197
Trend	100	66	70	58
Total Sales of DI	60612	66114	65504	68249
Trend	100	109	108	113
Other Domestic Producers	34899	27500	31760	27138
Trend	100	79	91	78
Total Domestic Demand	116604	107432	111936	107584
Trend	100	92	96	92
Share in Demand				
Domestic Industry	51.98	61.54	58.52	63.44
Other Domestic Producers	29.93	25.60	28.37	25.22
Subject Country	1.95	2.39	3.08	3.09
Others attracting duty	12.12	9.74	8.90	3.96

45. The above data shows that the domestic demand registered a drop of about 8% in the POI compared to the base year. Total import, as well as imports from other countries attracting antidumping duty, has declined significantly. The import volume from the subject country and imports from other countries not subject to antidumping duty have increased. Market share of the domestic industry and all domestic producers taken together, has increased compared to the base year. But the gain in market share of the domestic industry appears to be more due to the space vacated by other two domestic producers who were gradually reducing their production and sales and eventually have suspended their full production. At the

same time the market share of the subject country also shows a marginal increase compared to the previous year and almost a 50% growth compared to the base year.

(B) Price Effect of the Dumped Imports on the Domestic Industry

46. The impact on the prices of the domestic industry on account of the dumped imports from the subject country has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any. For the purpose of this analysis the weighted average cost of production, weighted average Net Sales Realization (NSR) and the Non-injurious Price (NIP) of the Domestic industry have been compared with the landed cost of imports from the subject countries.

(i) Price undercutting and underselling effects

47. Price undercutting has been determined by comparing the weighted average landed value of dumped imports from the subject countries over the entire period of investigation with the weighted average net sales realization of the domestic industry for the same period. For this purpose landed value of imports has been calculated by adding 1% handling charge and applicable basic customs duty to the value reported in the DGCIS data of import prices from the subject country.

48. In determining the net sales realization of the domestic industry, the rebates, discounts and commissions offered by the domestic industry and the central excise duty paid have been rebated.

49. For the purpose of price underselling determination the weighted average landed price of imports from Subject countries has been compared with the Non-injurious selling price of the domestic industry determined for the POI and cost of production for the remaining years.

Values in Rs/MT

Particulars	UOM	2002-03	2003-04	2004-05	POI 2005-06
Cost of sales	Rs./MT	*****	*****	*****	*****
Selling Price	Rs./MT	*****	*****	*****	*****
Landed Value (Thailand)	Rs./MT	72314	77219	95053	94079
Landed Value (others attracting duty)	Rs./MT	80888	80281	98490	94103
Landed Value others	Rs./MT	72249	77660	97519	94078
Price undercutting (Thailand)	Rs./MT				(-)*****
Price undercutting (Thailand)	%				(-)5 to 15%
Non Injurious Price	Rs./MT				****
Price Underselling (Thailand)	Rs./MT				****
Price Underselling (Thailand)	%				5 to 15%

50. The Authority notes that the landed value of imports from the subject country was above the net sales realization of the domestic industry, thus resulting in negative price undercutting. But the landed value of dumped imports from the subject country seems to have significant price underselling. However, price

undercutting is to be seen alongwith the price suppression and depression in the domestic market as in a situation of significant price suppression or depression in the domestic market the import prices could have negative undercutting.

(ii) Price suppression and depression effects of the dumped imports:

51. The price suppression effect of the dumped imports have been examined with reference to the cost of production, net sales realization and the landed values from the subject countries. The above data shows that the cost of production of the subject goods have significantly increased compared to the base year as well as the previous year. The increase in cost of production is linked to the increase in ACN price which is the basic raw material of Acrylic fibre. Import data of ACN shows an increase of about Rs8/- per Kg during 2004-05 and 2005-06. However, the CIF import price and the landed value of dumped imports from the subject country have not registered any significant increase. At the same time the selling price of the domestic industry has declined substantially in the POI after improvement till the previous year indicating significant price depression. The Authority also notes that there is a significant decline in the demand for the subject goods in the domestic market whereas dumped imports are continuing from several sources. Therefore, the domestic industry appears to have been forced to keep the prices low in order to retain its market share.

G.4 Examination of other Injury Parameters

52. Other economic parameters, which could indicate existence of injury to the domestic industry, have been analysed here as follows:

i) Productivity

53. Productivity of the domestic industry has been measured in terms of its labour productivity of the output and it has been noticed that the productivity has improved because of increase in production while employment level remains the same compared to the base year.

Particulars	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	POI 2005-06
Productivity	Per Employee	50.04	59.56	62.91	54.50
Trend	Indexed	100	119.04	125.73	108.93
Productivity	MT/Day	192	218	235	209
Productivity per Day - (Considering 360 days of production in a year)					

ii) Profits and actual and potential effects on the cash flow

Particulars	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06 (POI)
Cost of Sales	Rs./MT	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	99.09	107.11	123.54
Selling Price	Rs./MT	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	105	124	117
Profit/Loss	Rs. MT	(*****)	*****	*****	(*****)

Trend	Indexed	(100)	1652	5000	(2200)
Total Profit/Loss on Domestic Sales	Rs. Lacs	(*****)	*****	*****	(*****)
Trend	Indexed	(100)	1802	5404	(2477)
Depreciation	Rs. Lacs	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	100	98	101
Cash Profit/Loss	Rs. Lacs	*****	*****	*****	(*****)
Trend	Indexed	100	182	334	(1)

54. The performance of the domestic industry, in terms of profit and loss shows that after a significant improvement till 2004-05, the domestic industry has suddenly started suffering substantial loss in the POI. The loss is due to substantial increase in the cost of production in the POI while the selling prices have remained depressed during the same period.

iii) Employment and wages

Particulars	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Employment					POI
No. of Employee	Nos.	1383	1315	1347	1383
Trend	Indexed	100	95.08	97.40	100.00
Wages	Rs. Lacs	1808	1915	1977	2162
Trend	Indexed	100	105.92	109.35	119.58
Wage per Employee	Rs. Lacs	1.31	1.46	1.47	1.56
Trend	Indexed	100	111.40	112.27	119.58

55. Employment level and wages do not show any deterioration of the condition of the domestic industry. About 20% increase in wages over a period of 4 years is not significant considering general increase in wage level across the economy.

iv) Return on investment and ability to raise capital

Particulars	UOM	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06 (POI)
Capital Employed - NFA + Working Capital	Rs. Lacs	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	85	89	90
Profit	Rs. Lacs	(*****)	*****	*****	(*****)
Trend	Indexed	(100)	1802	5404	(2477)
Interest	Rs. Lacs	*****	*****	*****	*****
Trend	Indexed	100	93.14	65.90	61.51
PBIT	Rs. Lacs	*****	*****	*****	(*****)
Trend	Indexed	100	130	197	-11
Return on Capital Employed - NFA +	%	*****	*****	*****	(*****)

Working Capital					
Trend	Indexed	100	153.08	222.75	(11.73)

56. The above data shows that the profitability of the domestic industry, after a significant improvement up to 2004-05, has declined and has become negative during the POI due to increase in cost while the prices are depressed.

v) Investment

57. The domestic industry has not made any significant capacity addition or capital investments during the POI.

vi) Magnitude of Dumping

58. The dumping margin determined for the subject country and the applicant exporter is above de minimis level.

vii) Factors affecting prices

59. The interested parties have argued that other factors such as inter fibre competition at the spinning industry level and low demand for acrylic fibre in India during the POI has affected the prices of the subject goods manufactured and sold by the domestic industry. The Authority has examined the change in cost structure, competition in the domestic industry and prices of competing substitutes for analyzing the factors other than dumped imports that might be affecting the prices in the domestic market. Acrylic fibre is an economical substitute for wool and has several application in apparel, household and industrial areas and continues to remain so because the price of the substitute product remains high. However, domestic demand has declined by about 8% during the POI. The Authority also notes that the participating producers of the subject goods account for about 64% of total domestic demand and the price other producers, also move within similar price bands. It has also been brought to the notice of the Authority that two other producers of the subject goods were significantly reducing their production and eventually have suspended production, though out side the period of investigation. Therefore, several factors, including the demand situation in the country and volume and prices of dumped imports from various countries appear to be affecting the prices of the domestic industry simultaneously.

viii) Inventories

Particulars	Unit	2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
					POI
Inventories - at the end of period	MT	4625	1553	4380	5091
Trend	Indexed	100	34	95	110
Inventories as % of production	%	6.68	1.98	5.17	6.75
Trend	Indexed	100	30	77	101

60. The inventory level of the domestic industry shows marginal increase during the POI.

G.5 Other Known factors and Causal Link

61. As recorded earlier the exporters and other interested parties have raised several arguments in their written submissions during the course of the investigation which essentially argues that the domestic industry has improved its overall performance and injury if any, has been suffered because of factors other than the dumped imports. The arguments of the interested parties have been examined with reference to mandatory factors and other factors that might have affected the condition of the domestic industry as follows:

i) Volume and prices of imports from other sources

62. During the POI, other than the subject countries, imports have taken place from several other countries, including countries against which antidumping duty is in force. The data also shows that imports from countries attracting antidumping duty have declined substantially. Imports from countries not attracting duty has increased after a significant decline till the previous year. However, the goods have been imported from several countries and volumes of import from individual countries are small and at similar price bands.

ii) Contraction in demand and / or change in pattern of consumption

63. Total domestic demand of the product under consideration, has shown a marginal decline of about 4% during the POI compared to the previous year and 8% compared to the base year. The interested parties have argued that the drop in demand is because of inter-fibre substitution at the yarn level due to multi-fibre policy and anomalies in tax structure. However, examination of output and sales of the domestic industry indicates that contraction in demand does not seem to have affected the domestic industry in physical parameters in view of the fact that production and sales of the domestic industry has increased during the POI.

ii) Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

64. The subject goods are freely importable and there are no trade restrictive practices in the domestic market. The participating domestic industry constitutes over 70% of the capacity in the country. Though major proportions of imports from various other sources are attracting antidumping duty, antidumping duty unpaid landed value of imports from these sources are within a very narrow band indicating severe competition between various sources for the domestic market.

iii) Development of technology and export performance

65. The interested parties have argued that the technology and plants of the domestic industry are old and outdated. The Authority notes that world over acrylic fibres is manufactured using either dry technology or wet technology. Out of 5

producers in the country two producers' use dry technology and three use wet technology to produce the same product. In terms of technological standards and cost of operation there is no significant difference. Therefore, technological difference is not a factor affecting the performance of the domestic industry.

66. The exports of the product under consideration by the domestic industry have increased substantially from the base year.

Particulars		2002-03	2003-04	2004-05	2005-06
Qty in MT					POI
Export sales	MT	4620	15282	16407	6419
Trend	Index	100	331	355	139

67. The interested parties have raised a point that the exports by the petitioners are at low prices which might have caused injury to them. But the volume of exports is less than 10% of their domestic sales and the price difference is also not very significant to contribute substantially to the injury of the domestic industry. However, the injury to the domestic industry has been assessed on the basis of their domestic performance only and injury if any caused due to their export performance has not been attributed to the dumped imports.

iv) Productivity of the Domestic Industry

68. Productivity of the domestic industry in terms of labour output and daily output has shown substantial improvement. Therefore, productivity is not a factor which can be attributed to the injury of the domestic industry. In fact domestic industry has tried to reduce its losses in its domestic operation through improvement in productivity.

G.6 Overall assessment of Injury and Causal Link

69. In its post disclosure submissions the applicant exporter has submitted that Indian market of 100000 MTs is being catered to by 5 to 6 small producers and the undesirable competition among them is responsible for the current situation on the Indian Acrylic Fibre Industry. An import of 10,000 MT in a 100000 MT market can hardly be a reason for injury. As far as the increase in ACN prices and its impact on the product under consideration is concerned, the exporter has argued that their sales are made in line with the international prices and market conditions which may not always increase in line with the ACN price. In this connection the Authority notes that in a shrinking demand situation and surplus capacity in the domestic market any significant volume of imports with adverse price trend will have significant impact on the domestic industry which is demonstrated in this case.

70. The examination in the previous sections indicates that whereas the performance of the domestic industry has improved in terms of physical parameters such as capacity, production, capacity utilization and sales, the domestic industry's financial condition has deteriorated during the POI due to decline in selling price and increase in cost of production. The injury to the domestic industry appears to

have been caused cumulatively due to the volume and price effects of the dumped imports and other factors, such as decline in demand, as examined above.

G.6 Magnitude of Injury and injury margin

71. The non-injurious price of the subject goods, determined for the domestic industry taking into account the cost data of the domestic industry, has been compared with the landed value of imports from the subject country for determination of the injury margin which works out as follows:

Injury Margins		Thai Acrylic	Others
CIF Price	Rs./Kg	*****	*****
Landed Value	Rs./Kg	95611	82532
NIP	Rs./Kg	*****	*****
Injury Margin	Rs./Kg	*****	*****
Injury Margin %	%	0-10%	15-25%

H. Lasting Nature of changed circumstances and likelihood of continuation or recurrence of injury

72. Article 11.2 of the ADA provides that

The authorities shall review the need for the continued imposition of the duty, where warranted, on their own initiative or, provided that a reasonable period of time has elapsed since the imposition of the definitive anti-dumping duty, upon request by any interested party which submits positive information substantiating the need for a review. Interested parties shall have the right to request the authorities to examine whether the continued imposition of the duty is necessary to offset dumping, whether the injury would be likely to continue or recur if the duty were removed or varied, or both. If, as a result of the review under this paragraph, the authorities determine that the anti-dumping duty is no longer warranted, it shall be terminated immediately.

73. Rule 23 of AD Rules of India also requires the Authority to examine the need for continued imposition of the duty from time to time. The exporter in its submission has argued that mid term review investigation does not require an examination of likelihood aspects as in the case of a sunset review. However, the Authority is of the view that such an examination would also involve an examination of the lasting nature of the changed circumstances and the likelihood scenario in the event of withdrawal of the duty. In order to determine whether the changed circumstances of dumping is of lasting nature and whether injury to the domestic industry would continue or recur in the future if the duties are removed, the trend in volume of sales of the applicant exporter and its prices in the home market as well as third country export markets; and their likely impact on the domestic industry has been examined.

74. In this connection the domestic industry has *inter alia* submitted:

- That the exporters from the subject country in general and the applicant for the review in particular, are still dumping the material in the Indian market. Though there is a significant increase in raw material prices, the export price of the applicant has not shown proportionate increase indicating absorption of cost by the exporter;
- That Domestic industry is suffering continued injury due to dumped import from subject countries and should the Anti Dumping Duty be revoked, the injury to the domestic industry would recur or intensify.
- That Volume of imports from subject countries has increased after imposition of antidumping duty while import from other countries attracting antidumping duty has declined significantly indicating thereby likelihood of intensification of dumping once the duties are revised or revoked;
- That the domestic industry is responding to the situation by reducing its selling prices though the cost of production has increased due to increase in raw material prices in the international market;
- That the producers in subject countries, particularly the applicant exporter from Thailand are holding significant surplus capacities and the demand in the subject countries is significantly below the capacities created by them. Therefore, there is a great possibility that revocation of duty would lead to surge in imports and severe injury to the domestic industry.

75. The Authority has examined these arguments in the light of the information on the capacity and production of the applicant exporter and the price levels of its domestic sales and exports to India and other countries. The Authority has also examined the price levels at which the goods are entering Indian market from the subject country in spite of the duty in force and its price undercutting and underselling levels, demand scenario, trend in cost of raw materials etc. to examine the lasting nature of the changed circumstance and likelihood of continuation or recurrence of injury to the domestic industry.

76. In this connection the Authority notes that total exports constitute about 70% of total sales of the applicant exporter and its export to India is about 6% of its total exports. The volume of its exports to India has increased by almost 30% in the last three years whereas its domestic sales have declined by almost 9%. Therefore, there is a significant surplus capacity of the company far beyond the domestic demand in Thailand and the company heavily depends on the export market. Indian market remains an import market for the exporter.

77. The price level of the product sold by the applicant in its domestic market, Indian market and other third country export markets also indicate that during the POI the increase in prices for exports to India has been by a higher percentage compared to the prices to other markets while these imports attract antidumping duty. Though the landed value of the subject goods did not undercut the domestic selling prices in India during the POI due to significant price depression, the price underselling was significant.

78. It is also noted that dumping is continuing from the subject country in spite of the antidumping duty in force. As far as continuation or recurrence of injury to the

domestic industry is concerned the price levels at which the goods are entering Indian market from the subject country, in spite of the duty in force, is an important indicator. The above factors indicate that the change in export prices to India is not in line with the general trend of prices of the applicant exporter and therefore, the change in export price does not appear to be of a lasting nature.

79. It is also noticed that there was no price undercutting during the POI though the price underselling by the exporters from the subject country, including the applicant for the review, were significant and volume of export of the applicant exporter to India has increased. The volume of exports of the applicant to third countries is also significant and price level is also lower than price to India and in the home market of the exporter. Therefore, export orientation of the exporter is very clear. The volume of exports of the applicant exporter from Thailand and its price level to third countries; and decline in demand in India indicates that the price to India could drop and volume could increase if the duty is revoked. Further reduction in prices and increase in volume, in a scenario of declining demand in the domestic market, is likely to continue and intensify the injury to the domestic industry. The Authority also notes that in spite of improvement in the condition of the domestic industry in several physical parameters, the performance in financial terms has not improved due to the fact that the goods are still being dumped from several sources and there is a slump in demand for the product in the domestic market.

80. Therefore, the Authority concludes that the changed circumstances, on the basis of which the applicant exporter has sought the review, are not of lasting nature and there is a significant possibility of dumping and injury to continue or recur if the duties are reduced or withdrawn based on the current dumping margin.

I Conclusion and recommendations

81. Having initiated and conducted the review as requested by the exporter and having examined various issues, as recorded in the foregoing paragraphs, the Authority is of the view that

- a) the subject goods continues to be sold by the applicant exporter and other exporter from Thailand, in the Indian market, at dumped prices and the dumping margin is above de minimis level;
- b) though the dumping margin of the applicant exporter has recorded a significant decline during the POI, the said decline is not of a lasting nature;
- c) the domestic industry continues to suffer material injury and the injury has been caused due to volume and price effects of dumped imports along with cumulative effect of other factors; and
- d) the changed circumstances of dumping and injury are not of lasting nature and are likely to recur or intensify if the duties are reduced or revoked.

82. In view of the above, the Authority does not recommend any revision of the duties in force against the subject applicant exporter and the subject country under review.

J Further Procedures

83. An appeal against the orders of the Central Government that may arise out of this recommendation shall lie before the Customs, Excise and Service tax Appellate Tribunal in accordance with the relevant provisions of the Act.

84. The Authority may review the need for continuation, modification or termination of the definitive measure as recommended herein from time to time as per the relevant provisions of the Act and public notices issued in this respect from time to time. No request for such a review shall be entertained by the Authority unless the same is filed by an interested party as per the time limit stipulated for this purpose.

R. GOPALAN, Designated Authority